ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

मई, 2021

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

मई 2021
वर्ष : 1, अंक : 5

इस अंक की रचनाएं

कहानियां

क्षमा शर्मा	: कहां गई झील	6
समीर गांगुली	: भूतभुलैया	14
डॉ. विमला भंडारी	: कलर बॉक्स	17
पंकज चतुर्वेदी	: मॉनीटर का चुनाव	20
अनिल जायसवाल	: परियां होती हैं क्या ?	24
आशा शर्मा	: नीले ग्रह पर परियां	28
मनोहर चमोली 'मनु'	: परी सब ठीक कर देगी	30
डॉ. संगीता बलवन्त	: सच्ची परियां	33
ललित शौर्य	: अंगूरों का शहर	36
राजकुमार धर द्विवेदी	: गोलू और परी	38
डॉ. शील कौशिक	: सोनपरी	42
इंद्रजीत कौशिक	: परी की तलाश	44

कविताएं

प्रकाश तातेड़	: प्यारी परियाँ	9
रावेंद्रकुमार रवि	: दूँगी तुम्हें बधाई	13
डॉ. अनुपमा गुप्ता	: सूरज की धूप	26
उदय मेघवाल 'उदय'	: चिड़िया रानी	26
शादाब आलम	: परी का घर	27
श्रवण कुमार सेठ	: मक्खी	34

जानकारी

मोनिका अग्रवाल : फेयरी टेल जगहें 4, प्रसिद्ध संग्रहालय 40
अनिल जायसवाल : हमने देखीं परियां 10, फुटबॉल का सफर 60

विविध

आइवर यूशियल	: पजल्स	35
पर्यटन : गिरिजा कुलश्रेष्ठ	: हिमालय की गोद में	46
चित्रकथा पंकज राय	: चलो दौड़ लगाएं	49
पुस्तक परिचय	:	58
जरा सोचो	:	59
धन्यवाद ज्ञापन : 63,	अपील :	64

बाल मंच

चित्र (52-55) रोहन श्रीवास्तव, आरना गौरव, गरिमा सिंह, आदित्य पाण्डेय, आन्या, अर्शदीप ऐरी, सय्यद क़ुबा सलीस, कुनिका कौशिक, शांभवी गुप्ता, शिवांक गुप्ता, अंशुमन रॉय

कविताएं : हार्दिक ऐरी : प्यारी बहना 56, निहारिका शर्मा : रंगीन दुनिया 56,
मानसी कदम : चंदा मामा 57

कहानी : अर्श राज : जादुई लेखनी 57

क्या जादुई शक्तियां होती हैं ?

आज, जब आप सबसे लिए लिखने बैठा हूं, तो मन भरा हुआ है।

आजकल कोरोना को लेकर तकरीबन हर घर में हाहाकार की स्थिति है। जहां अपने बिछुड़ गए, वहां तो रोना है ही, पर बाकी घर इस आशंका से भयभीत हैं कि कोरोना किसी भी रूप में घर में प्रवेश ना पा जाए। एकाएक अप्रैल में हुए इस महा विस्फोट ने सबको फिर से घरों में सिमटने को मजबूर कर दिया है।

पर बच्चो, जरा अपने घर के बड़ों से पूछो, क्या यह केवल सरकार की विफलता है? नहीं, इस देश को अपने नागरिकों की लापरवाही का दंड भी भुगतना पड़ रहा है। भारत में स्थिति यह थी कि कोरोना के खात्मे से पहले ही जीत का जश्न नेताओं ने ही नहीं, हम जैसे आम नागरिकों ने भी मनाना शुरू कर दिया था। वैक्सिन बनते ही हमने मान लिया कि हमें कोरोना के विरुद्ध एक अमोघ अस्त्र मिल गया। इतिहास गवाह है कि सावधानी और दिमाग से काम न लेने पर अमोघ अस्त्र होते हुए मेघनाद और कर्ण जैसे महारथियों को भी जान से हाथ धोना पड़ा था। तो हमने कैसे मान लिया कि वैक्सिन की जादुई शक्ति से हम इस लड़ाई में लापरवाही बरतने पर भी विजयी होंगे?

बचपन में हमें कहानी सुनाई जाती थी कि हर दुख को या तो भगवान दूर करते हैं या फिर परियां। परियां होती भी हैं क्या? इसका जवाब कोई नहीं दे पाया। यह एक तरह से विश्वास की बात है। जो गरीब, लाचार या जरूरतमंद की सहायता करे, वो किसी भगवान या परी से कम नहीं।

परी कथाओं के प्रसिद्ध लेखक हैंस क्रिश्चियन एंडरसन का तो मानना था कि 'हर इनसान का जीवन अपने आप में परी कथा है।'

यह बहस चलती रहेगी कि परी कथाएं आज के वैज्ञानिक युग में बच्चों के लिए अच्छी हैं या नहीं। पर मेरा तो मानना है, जब तक बचपन जिंदा रहेगा, बच्चे पसंद करते रहेंगे, परी कथाओं का दौर चलता रहेगा। इसका सबसे बड़ा प्रमाण 21वीं सदी की दो सफलतम फिल्में 'अवतार' और 'एवेंजर्स एंड गेम' हैं जो साइंस फिक्शन होते हुए परी कथाओं का ही प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके अलावा हैरी पॉटर तो है ही। मूल मुद्दा है मनोरंजन। जो कहानियां बच्चों को थोड़ी देर के लिए खुश करके जीवन में खुशियां भर दें, वो खराब नहीं हो सकतीं।

तो पायस के इस नए अंक में परी कथाओं को पढ़ते समय कल्पना की दुनिया में खो जाओ।

पर ध्यान रहे, कोरोना जैसी बुरी शक्तियों से तुम्हें अपना और परिवार का बचाव स्वयं करना है, क्योंकि तुम्हारी सावधानी ही कोरोना को मात दे सकती है।

अनिल जायसवाल

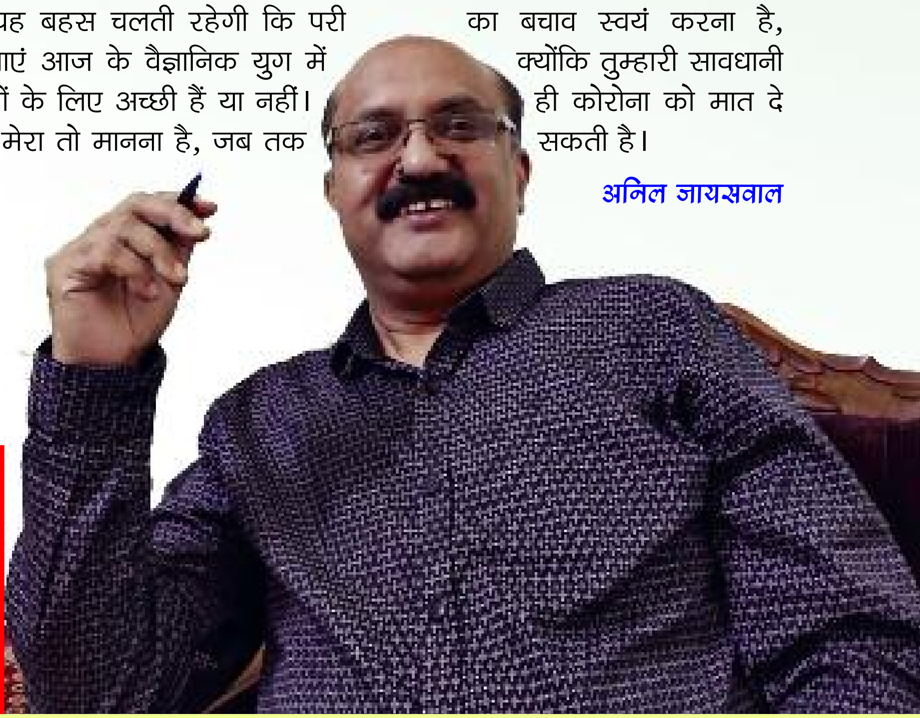

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका **पायस**

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

◆ लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
◆ ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

फेयरी टेल जगहें

जब मैं छोटी थी और परियों की कहानियों की किताबें पढ़ती थी, तो बहुत बार मेरा मन करता कि काश! मैं भी कभी इन परियों की दुनिया या जादुई दुनिया में पहुंच जाऊं, जहां हमें चमकती हुई गुफाएं, छोट-छोटे विचित्र कस्बे, और पहाड़ों पर बने हुए महल देखने को मिल सकें और मैं भी ऐसी दुनिया का लुत्फ उठा सकूं।

पता है, अब सच में ऐसी जगहों पर आप जा सकते हैं। दुनिया में कुछ ऐसी जगहें हैं, जिन्हें आप फेयरी टेल फिल्मों में देखते होंगे और आप वहां सच में जा सकते हैं। आइए, जानते हैं कहां है ऐसी जादुई जगहें।

आइले ऑफ स्काई

आप इसके नाम से ही सोच रहे होंगे कि यह कोई कहानियों में आने वाली जगह होगी, जो असली नहीं हो सकती है। लेकिन यह पंख के आकार का आइलैंड जोकि स्कॉटलैंड में है, सच में इस दुनिया में है। यह आपको एकदम फेयरी टेल के जैसा लगेगा। आप यहां के सुंदर फेयरी पूल्स में जा सकते हैं, जो कि ब्लैक कुलीन पहाड़ के साथ में हैं। इन पत्थरों पर एडवेंचर करने करते-करते आप एक झरने पर पहुंच जाएंगे। वहां पर आपको बहुत साफ पानी वाले पूल मिलेंगे, जिनमें आप तैर भी सकते हैं।

गार्डन ऑफ निंफा

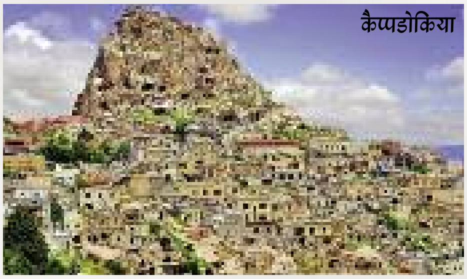

कैप्पडोकिया

रेन फॉरेस्ट

ज्यूफिन

ज्यूफिन (ताईवान) पहुंचकर आप खुद को एक ऐसी दुनिया में महसूस करेंगे, जो केवल आपने फिल्मों में देखी या किताबों में ही पढ़ी है। यहां पहुंचकर मानो आपका सपना साकार हो जाएगा। अगर आप खाने-पीने के शौकीन हैं, तो भी एक पहाड़ के पास स्थित ताइपाई गांव आपके लिए शानदार रहने वाला है। यहां की गलियों में ही आपको नए-नए और

आइले ऑफ स्काइ

स्वादिष्ट भोजन की महक आपको अपनी ओर आकर्षित करती है। यहां के एक पुराने गांव में जाने के लिए आपको बहुत सारी सीढ़ियां चढ़ना पड़ेंगी, लेकिन रास्ते के टी हाउस में रुककर आप अपने पैरों को थोड़ा आराम दे सकते हैं।

कैप्पडोकिया

पहाड़ों के ऊपर उड़ने वाले हॉट एयर बैलून में ट्रैवल करने से लेकर एक अंडरग्राउंड शहर की गुफाओं में जाकर आप तुर्की के इस शहर का मजा ले सकते हैं। यह शहर आपको हर कोने में एक फेयरी टेल जैसा महसूस करवाएगा। यहां की रॉक कट चर्च जोकि बहुत से मनभावने रंगों से पेंट की गई है, आपको अपनी ओर खींचेगी। आप यहां पर स्थित ओपन एयर म्यूजियम में भी जा सकते हैं। आप यहां के आलीशान केव सूट होटल में भी रुक सकते हैं, जो चट्टानों के नीचे बनाया गया है। आप यहां के टेरेस पर बैठकर तुर्किश कॉफी का भी आनंद ले सकते हैं।

रेन फॉरेस्ट

यह एक रेन फॉरेस्ट है। अगर आप यहां जाएंगे, तो आपका रास्ता बहुत सारे छोटे-छोटे पेड़-पौधों द्वारा घिरा हुआ होगा जिन्हें देखकर आपको लगेगा, मानो ये आपका स्वागत करने के लिए ही बने हैं। ये पेड़ अपनी टहनियों से आपको घेर लेंगे। यह आपको एक कहानी जैसा लग सकता है, लेकिन बता दें कि अमेरिका में हकीकत में यह जगह है। आप इसका अनुभव लेने के लिए ओलंपिक नेशनल पार्क में जा सकते हैं जोकि वॉशिंगटन स्टेट में है। यहां के इको सिस्टम का लुत्फ उठाने के लिए आपको दिन में जाना चाहिए।

गार्डन ऑफ निंफा

मार्च और नवंबर के बीच ही आप इस जगह पर जा सकते हैं। इसे दुनिया के सबसे खूबसूरत गार्डेंस में से एक माना जाता है। यहां आप ऐसे रास्तों पर घूम सकते हैं, जो रंग-बिरंगे फूलों से घिरे होंगे। यहां घूमने पर आपको ऐसा लगेगा कि आप कहानियों में सुने गए मायावी पेड़ों से घिरे हुए हैं जो आपसे बातें कर रहे हैं और अपनी ही मस्ती में झूम रहे हैं। फेयरी टेल मॉन्सटर्स के बिना तो पूरी हो ही नहीं सकती है। इसलिए आप यहां के 'पार्क ऑफ मॉन्सटर्स' में भी घूम सकते हैं।

अपने लेखक को जानिए

मोनिका अग्रवाल : शिक्षा : समाज शास्त्र में स्नातक और कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा। सम्प्रति : 'अनुगूंज' कहानी संग्रह; 'पतझड़ में मधुमास' कहानी संग्रह; 'किड्स स्टोरीज' बाल कहानी संग्रह; 'अम्मा कहती थी' सांझा काव्य संग्रह! पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

ज्यूफिन

कहां गई झील

चांद के नीचे से बादल निकलते, तो चांद को लगता कि उन्हें हाथ बढ़ाकर छू ले। लेकिन मगर कैसे, वे तो इतने दूर थे। हां, उसकी किरणों के मजे थे, वे तो बादलों के ऊपर सवारी करती थीं। किरणें तो जैसे रात होने का इंतजार ही करतीं। शुक्ल पक्ष में जब पंद्रह दिन चांद निकलता, तो उन्हें इंतजार रहता कि वे बादलों के साथ हर जगह घूमकर आएं और चांद को इसके किस्से सुनाएं। चांद को लगता था कि किरणों के पास पहाड़ों, पेड़ों, नदियों, खेत-खलिहानों के इतने किस्से हैं कि वह सुनते-सुनते थक जाए, मगर वे कभी खत्म न हों।

जब परियां धरती पर उतरतीं, तो किरणें भी उनके पीछे-पीछे आतीं। वे पानी को हिलाती-डुलातीं, तो लगता, उनका चंद्रमा पूरी झील में दौड़ रहा है। जबकि वह तो कहीं नहीं दौड़ता था। अपनी जगह ही रहता था, लेकिन किरणों को इससे क्या? वे तो पूरे पानी में उसे दौड़ा-दौड़ाकर उसका पीछा करती थीं। किरणें चांद के साथ पानी में अठखेलियां करतीं।

एक दिन की बात कि परियां धरती की तरफ उतरने लगीं, किरणें भी उनके पीछे-पीछे आईं। परियां उतरीं तो हैरान, ये कहां आ गईं? पेड़ तो वही थे, घने और छतनार। सामने खड़े पहाड़ भी। दूर लहलहाते खेत भी, जो चांदनी में इतने खामोश थे कि संकेत में कहना चाहते थे, 'आओ परियों, तुम्हारा स्वागत है।'

सब कुछ तो था, मगर वह झील कहां गई? उसमें लगे सुगंधित कमल। उसमें तैरते बर्फ से सफेद हंस। उछल-कूद करती मछलियां।

दो दिन पहले जब परियां आई थीं, तब तो झील यहीं थी। कितना तो नाची थीं, वे उसके किनारे। देर तक

खूब खेली थीं और अपने लोक की तरफ उड़ने से पहले झील से वादा करके गई थीं कि फिर आएंगी।

उस दिन झील को देखकर यह भी नहीं लगा था कि उसमें पानी कम हो रहा है, वह सूखने वाली है। तो एकाएक झील कहां गई? कहीं ऐसा तो नहीं कि किसी ने सारा का सारा पानी पी लिया हो, लेकिन किसने?

परियां सोच में पड़ गईं। उनमें सबसे छोटी परी शीना तो जोर-जोर से रोने लगी। वह पुकारने लगी, "झील, प्यारी झील। तुम कहां चली गई, मुझे तुम्हारी याद आ रही है।"

तब उन सबमें सबसे बड़ी परी शैला ने उसे चुप कराया, "रोना बंद कर दो। झील तो हमारी सहेली है। उसे भी तो हमारे यहां आने का इंतजार रहता था। क्या पता, मजाक करने के लिए कहीं छिप गई हो।"

"लेकिन कहां?" शीना ने पूछा, तो शैला ने उसे ढाढस बंधाते हुए कहा, "अरे, दूर कहीं नहीं गई होगी। यहीं कहीं होगी। मिल जाएगी।"

तभी छड़ी हाथ में उठाए पिंकी बोली, "कहीं झील में कोई राक्षस तो नहीं रहता था।"

"अगर रहता भी हो, तो तुम्हें क्या?" शैला बोली

"क्या पता, उसने ही सारा पानी पी लिया हो और झील को सुखा दिया हो?"

यह सुनकर शैला भी सोच में पड़ गई। ऐसी कहानियां उसने भी सुनी हैं। लेकिन अगर ऐसा हुआ भी है, तो वह राक्षस है कहां, उसे कैसे ढूंढें? कहां मिलेगा। कौन बताएगा उसका पता? सभी परियां सोच में डूबी थीं। न आज वे नाची थीं, न झील में डुबकी लगाई थी, न ही आपस में हंसी -मजाक किया था।

तभी उन्हें ठंडक सी महसूस हुई। अरे ये क्या! परियों ने देखा झील आसमान में उड़ी जा रही है।

"अरे ये झील उड़ रही है। कैसे? इसके तो पंख नहीं होते हमारी तरह।" एक परी ने कहा।

"क्या पता कोई जादूगर या राक्षस उसे उड़ाए लिए जा रहा हो? चलो, उसे पकड़ते हैं। कहती हुई परियां झील को पकड़ने के लिए दौड़ीं, मगर झील तो उनसे बहुत आगे निकल गई।

उड़ती हुई झील, ऐसा गजब क्या पहले किसी ने देखा है? झील के पीछे परियां उड़ी जा रही थीं। तभी शैला ने कहा, "अरे बहनो, देखो सवेरा होने को है। झील का पीछा करते-करते तो सूरज निकल आएगा। तब तो हम उड़ने लायक भी नहीं रहेंगे। चलो जल्दी से वापस।"

"मुझे नहीं जाना है वापस। मैं तो वहीं रहूंगी, जहां झील रहेगी।" शीना ने कहा।

"ठीक है, वहीं रह लेना। कल जब आएंगे, तो देखेंगे कि झील कहां जाकर रुकी। अभी तो चलो।" शैला ने समझाया।

लेकिन शीना थी कि जाने को राजी ही नहीं हो रही थी। यह देख शैला ने नाराज होकर कहा, "अगर तुम मेरी बात नहीं सुनोगी, तो परी रानी से शिकायत कर दूंगी। परी रानी का हुक्म है कि जिन्हें भी रात में धरती पर आना है, उन्हें मेरी बात माननी होगी। परी रानी ने मुझे इस बात की जिम्मेदारी सौंपी है कि तुम सबका खयाल रखूं। तुम सबको भी मेरी बात माननी चाहिए। वरना कभी यहां नहीं आ सकोगी।"

शैला की बात सुनकर दूसरी परियां भी शीना को समझाने लगीं। फिर जल्दी ही वे सब परीलोक की तरफ उड़ गईं।

जैसे ही परियां उड़ीं, तो झील लौटी और वापस अपनी जगह पर आ गई। दरअसल तो वह परियों से नाराज थी, इसलिए चली गई थी। एक दिन परियां आपस में बातें कर रही थीं, तो शैला ने कहा था, "सोचो, अगर हम यहां न आएं, तो इस झील का मन भी कैसे लगे।"

"तो हम यहां कौन सी रोज आती हैं। जब हम नहीं होतीं, तो भी तो इसका मन लगता होगा।" शीना बोली।"

"अरे, हम तो कहीं भी किसी भी नदी, तालाब के किनारे जा सकती हैं। हमारे तो पंख हैं, मगर इस झील का क्या, यह तो सैकड़ों साल से यहीं पड़ी है। न कहीं आ जा सकती है। न उड़ सकती है।"

शैला की बात सुन, बस उसी दिन झील ने तय कर लिया था कि वह परियों के इस घमंड को तोड़कर रहेगी कि उनके बिना वह रह ही नहीं सकती। इसीलिए उस रात जैसे ही हवाओं में खुशबू बहने लगी, घुंघरुओं की रुन-झुन सुनाई देने लगी, आसमान में परियां नजर आने लगीं, झील कुछ बुदबुदाई और अपनी जगह से गायब हो गई। वह दूर न जाकर वहीं पहाड़ों की ओट में छिप गई, जिससे कि परियों को पता न चले और जब परियां उसे ढूंढ़ने की तैयारी करने लगीं, तो वह उनके सामने ही उड़ चली। वह परियों के

अपने लेखक को जानिए

क्षमा शर्मा : नंदन पत्रिका के संपादन से चार दशकों तक जुड़ी रहीं। बच्चों के साथ बड़ों के लिए भी बहुत लिखा। हिंदी साहित्य की विशिष्ट साहित्यकार। दस कहानी संग्रह, चार उपन्यासों के साथ कई अन्य पुस्तकें प्रकाशित। रोजाना किसी न किसी अखबार में कॉलम लिखती हैं।

उस अहंकार को तोड़ना चाहती थी कि वे उड़ सकती हैं और वह तो सदियों से एक ही जगह पड़ी है, इसलिए परियां उससे ज्यादा अच्छी हैं। और जैसे ही परियां परीलोक वापस गईं, वह अपनी जगह पर लौट आई।

अब हर रोज ही ऐसा होने लगा। परियां सोचने लगीं कि ऐसी क्या बात है कि वे रोज अपने सामने ही झील को उड़ते देखती हैं। ऐसी क्या बात है कि झील उनके आते ही उड़ जाती है और लौटते ही वापस आ जाती है। एक रात झील जब उड़ने लगी, तो शैला ने पूछा, "अरे, मेरी सखी झील। जरा बताओ तो, क्या बात है, जो तुम रोज हमें देखकर यहां से चली जाती हो और हमारे जाते ही वापस आ जाती हो?"

मेरी मर्जी कि मैं रोज कब यहां से जाऊं, कब आऊं, तुम पूछने वाली कौन?" झील गुस्से से बोली।

"अरे, इतनी नाराज क्यों हो? हमारी कोई बात बुरी लगी हो, तो माफ कर दो। तुम्हारे बिना तो मन नहीं लगता। परीलोक में भी तुम्हारी याद आती है। हमें माफ कर दो।"

शैला की तरह दूसरी परियां भी झील को मनाने लगीं। शीना तो जोर से रोने ही लगी। शीना को रोते देख झील भी परेशान हो उठी। एक पल में ही वह वापस आ गई। उसे आया देख परियां नाचने लगीं। दौड़-दौड़कर झील के पानी को स्पर्श करने लगीं। हंस तेजी से तैरकर खुशियां मनाने लगे। पेड़ों के पत्ते भी हिलकर उनकी खुशियों में चार चांद लगाने लगे। बहुत दिनों बाद सब मिलकर नाच-गा रहे थे। ✪

प्यारी परियाँ

दीपा ने मम्मी से पूछा,
परियाँ क्यों सपने में आतीं ?
अच्छा होता दिन में आकर,
हमको जादू-खेल दिखातीं।।

मम्मी ने उसको समझाया,
नहीं सत्य में परियाँ होतीं।
बालकथा या कविताओं में,
आकर बीज खुशी के बोतीं।।

कलम-कल्पना से उपजी हैं,
ये सुंदर उपकारी परियाँ।
बच्चों की बन सच्ची साथी,
साथ निभाती प्यारी परियाँ।।

अच्छा मम्मी समझ गई मैं,
फिर भी परियाँ मन को भातीं।
सपनों में नित आ बच्चों के,
जीवन को हर्षित कर जातीं।।

अपने लेखक को जानिए

प्रकाश तातेड़ : सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य। बाल साहित्य एवं विज्ञान संबंधी पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित। अनेक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं, स्मारिकाओं, अभिनंदन ग्रंथों, संकलनों का संपादन। संप्रति : विगत 3 वर्षों से 'बच्चों का देश' राष्ट्रीय बाल पत्रिका में सह संपादक।

हमने देखीं परियां

जुलाई 1917, दिन शनिवार, दोपहर का समय। कौटिंग्ले के यॉर्कशायर गांव में सन्नाटा पसरा था, पर आर्थर राइट के घर में चहल-पहल थी। उसकी 15 वर्षीय बेटी एल्सी राइट अपनी 10 वर्षीय चचेरी बहन फ्रांसिस ग्रिफिथ के साथ पार्क में घूमने जाना चाहती थी। इसमें मि. राइट को कोई एतराज नहीं था। पर हंगामा इस बात पर था कि वह अपने साथ पापा का कैमरा ले जाना चाहती थी।

उस जमाने में कैमरा हर घर में नहीं होता था। आर्थर राइट को फोटोग्राफी का शौक था। अतः उन्होंने घर में फोटोग्राफी से संबंधित लैब भी बना रखी थी। उनसे ही फोटोग्राफी सीखकर, आज उनकी बेटी उनका कैमरा खुद उपयोग करना चाहती थी। आखिर बेटी की जिद के आगे पिता को हार माननी पड़ी, पर उस हार ने उस परिवार को विश्व प्रसिद्ध बना दिया।

हुआ यों कि जब बेटी ने फोटो खींचकर कैमरा पापा को वापस किया, तो पिता हमेशा की तरह रील को डेवलप कर फोटो निकालने लगे। पर यह क्या! फोटो में उन्हें बच्चों के साथ कुछ धब्बे नजर आए। उन्होंने ध्यान से देखा, तो उनके हाथ-पैर फूलने लगे। उन्होंने मैग्नीफाइंग ग्लास का उपयोग किया, तो सन्न रह गए। फोटो में बच्चों के साथ कुछ परियां नाचती-गाती नजर आ रही थीं।

"एल्सी, ग्रिफिथ, इधर आओ!" आर्थर चिल्लाए।

बच्चियां भागी-भागी आईं। डरकर एक कोने में खड़ी हो गईं।

"यह क्या है?" आर्थर चित्रों को हवा में लहराकर बोले।

"वह पापा...!" एल्सी हकला गई। तब ग्रिफिथ ने बात संभाली, "अंकल, यह सच है, हमें बगीचे में परियां मिली थीं। उन्होंने हमें अपना नाच दिखाया और एल्सी को तो फूल भी दिया।"

"क्या बकवास है यह! कोई परियां नहीं होतीं। यह सब मन की कल्पना है।" आर्थर बच्चियों पर चिल्लाए।

पर बच्चियां अपनी बात से टस से मस नहीं हुईं। आर्थर का अपने बच्चों पर विश्वास करने का मन कर रहा था, पर दिमाग मानने से इनकार कर रहा था।

बच्चों को बाहर भेजकर वह उनके कमरे में घुस गए। चप्पा-चप्पा छान मारा, पर कहीं से कोई भी ऐसा सुराग नहीं मिला, जिससे पता चलता कि बच्चों ने कुछ छेड़छाड़ कर यह फोटो तैयार किया है। थक-हारकर वह कमरे से बाहर निकल

आए और सिर पकड़कर बैठ गए। मन का एक कोना कह रहा था कि अगर बच्चों की बात सच निकली, तो सारी दुनिया में हंगामा हो जाएगा।

वही हुआ। आर्थर ने जो बात छिपाकर रखी, वह बात उनकी पत्नी पोली ने उगल दी। वह एक धार्मिक महिला थीं और धार्मिक उत्सवों में जाती रहती थीं। ऐसे ही एक उत्सव में वाद-विवाद के केंद्र में परियां थीं। बीच में जब कल्पना और सत्यता पर बात छिड़ी, तो पोली ने भेद उगल दिया, "मेरी बच्चियों ने परियों से मुलाकात की है और उनके साथ उनकी फोटो भी है।"

इस बात ने हंगामा मचा दिया।

जहां आम राय यह थी कि परियां होती ही नहीं हैं, वहां दो बच्चियां फोटो के साथ दावा कर रही थीं कि उनकी परियों से मुलाकात हुई है। लोगों ने इस रहस्य को अंतरिक्ष यानों (यू.एफ.ओ.) के होने-न-होने जैसी बड़ी बात के बराबर माना और फोटो को देखने के लिए होड़ मच गई। लोग चकित थे कि जिस रहस्य को बड़े-बड़े लोग सामने नहीं ला पा रहे थे, उसे दो बच्चियों ने हल कर दिया। जो परियों को मानते थे, वे चित्र देखकर भाव-विभोर हो गए। जो नहीं मानते थे, वे इस चित्र की चीर-फाड़ में लग गए, पर बच्चियों को कोई झूठा साबित नहीं कर पाया।

1920 में शर्लाक होम्स को गढ़ने वाले सर आर्थर कानन डायल को 'स्ट्रैंड मैगजीन' से परियों पर एक लेख लिखने का ऑफर मिला। लेख क्रिसमस अंक में छपना था। उन दिनों परियों को देखने का मामला गरम था। उन्होंने एडवर्ड गार्डनर को आर्थर राइट के पास फोटो व विवरण लेने भेजा। उन्होंने प्रिंट्स के साथ लौटकर बताया कि मामला सच्चा है और उन्हें लगता है, बच्चियां सच बोल रही हैं। सर आर्थर कानन डायल ने प्रिंट्स को एक विशेषज्ञ सर ओलिवर लॉज को दिखाया। उसने कहा कि उसे लगता है कि फोटो के साथ छेड़छाड़ की गई है। पर उसकी बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। बाद में गार्डनर फिर से बच्चियों के पास लौटे और उन्हें कैमरा और बीस फोटोग्राफिक प्लेट्स दीं, ताकि वे परियों की और फोटो खींचने के लिए प्रेरित हो सकें।

इन सब बातों के बीच उनका लेख पूरा हो गया और सर आर्थर कानन डायल उसे छपने के लिए देकर, ऑस्ट्रेलिया भ्रमण पर चले गए।

पत्रिका में सर आर्थर का लेख दो फोटो के साथ छपा। सुबूत होने के कारण सारे संसार में हंगामा मच गया और कुछ ही दिनों में पत्रिका के सारे अंक बिक गए।

पर उसका उलटा असर भी हुआ। बहुत-से वैज्ञानिक और विशेषज्ञ इस बात की सत्यता जांचने में जुट गए। रेडियम विशेषज्ञ हॉल एडवर्ड्स ने सारी जांच का नतीजा घोषित किया, "ये सारे फोटोग्राफ वास्तव में ट्रिक फोटोग्राफी है। परियां नहीं होती हैं।"

पर इन सब बातों से बच्चियों को क्या लेना था! गार्डनर के दिए कैमरे से उन्होंने परियों के तीन और चित्र खींचे। आर्थर राइट प्लेट्स को लेकर लंदन गए। उन्हें अब भी अपनी बच्चियों पर विश्वास नहीं था। पर उनकी पत्नी बच्चियों की सफलता पर फूली नहीं समा रही थीं। और चित्रों के सामने आने से एल्सी राइट और फ्रांसिस ग्रिफिथ की लोकप्रियता और बढ़ गई।

आखिर सत्यता की जांच के लिए एक दल बनाया गया। दल की तरफ से ज्योफ्री हडसन को प्रामाणिकता की जांच के लिए भेजा गया। उसने जब रिपोर्ट दी, तो हंगामा और बढ़ गया। उसकी रिपोर्ट थी, "परियां होती हैं। दोनों बच्चियों के साथ मैंने भी परियां देखीं। उन्होंने मेरे सामने आने से मना नहीं किया, पर मेरे साथ फोटो खिंचवाने को वे तैयार नहीं हुईं।"

अब संदेह की कोई गुंजाइश नहीं

थी। लोग इस बात को मानने लगे। पर इससे असहमत लोग अब भी इस रहस्य की तह में जाने का प्रयास करते रहे।

आखिर 1983 में भेद खुला और खोला भी किसने? उन्होंने ही जिन्होंने इस मामले को सामने लाकर सारी दुनिया में हंगामा कर दिया था। 1983 में एल्सी राइट 81 और फ्रांसिस ग्रिफिथ 76 वर्ष की थीं। आखिर एक साक्षात्कार में उन्होंने माना, "परियां नहीं होती हैं और जो परियां हमारे सामने आई थीं, वे परियां न होकर ट्रिक फोटोग्राफी थी। सन 1915 में छपी एक किताब 'प्रिंसेज मैरीज गिफ्ट बुक' में छपे परियों के चित्रों को सफाई से काटकर मैंने उनका अद्भुत सफाई से फोटोग्राफी के दौरान उपयोग किया था।"

दोनों बहनों ने पत्रिका के साथ-साथ परियों को बनाने वाले चित्रकार आर्थर शैफर्सन का नाम भी बताया। पर हडसन परियों को देखने का दावा करते हुए उनके साथ कैसे मिल गए, इस प्रश्न पर हंसते हुए ग्रिफिथ ने कहा, "लहर के विरुद्ध चलना बहुत मुश्किल होता है। उन्हें कोई सुबूत नहीं मिला था। उन्हें लगा, यदि वे हमारे दावे को झूठा बताएंगे, तो कहीं उन्हें लेने के देने न पड़ जाएं, इसीलिए वह भी हमारे साथ मिलकर दुनिया में मशहूर हो गए।"

पर ऐसा उन्होंने किया क्यों? आखिर क्या वजह थी कि दो बच्चियों को ऐसा गलत और झूठा काम करना पड़ा? इसका उत्तर देते हुए एल्सी राइट गंभीर हो गई। उसका जवाब था, "हम बचपन में परियों की कहानियां पढ़ती थीं, तो बड़े हमारा मजाक उड़ते थे। कहते थे, हम कल्पनालोक में रहती हैं। वे बच्चों को कल्पना की दुनिया से बाहर निकालना चाहते थे। इसी चिढ़ में हमने इतना बड़ा कदम उठा लिया। हमने सोचा था कि जब लोग चकित हो जाएंगे, तो हम सचाई से पर्दा उठा देंगे। पर देखते-देखते बात इतनी बढ़ गई कि सारी दुनिया में हंगामा मच गया। साथ ही जब सर आर्थर कानन डायल ने अपने लेख में हमारा जिक्र कर दिया, तो ऐसे में अपनी बात से पीछे हटने की हमारी हिम्मत नहीं हुई।" ✪

'प्रिंसेज मैरीज गिफ्ट बुक' में छपी परियां और फोटोग्राफ की परियां

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

◆ अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।

◆ आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।

◆ ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।

◆ संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL

Jais Features

akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगज़ीन सेटिंग, डिज़ाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

अपने लेखक को जानिए

रावेंद्रकुमार रवि : शिक्षक होने के साथ-साथ लेखन कार्य में निरंतर तीन दशक से सक्रिय। हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार 2018 से सम्मानित। बालमन तक पहुंचने की महक इनकी रचनाओं में विद्यमान रहती है। मुख्य रूप से बच्चों की खुशी के लिए विशेष लेखन।

दूँगी तुम्हें बधाई

रसगुल्ले की मधुर चाशनी,
देख परी ललचाई!

चींटी बनकर,
उसमें घुसकर;
पहले ख़ूब नहाई!
हुई नहाकर
जब ताज़ादम,
दावत ख़ूब उड़ाई!
मीठे-मीठे हुए ओंठ जब,
मीठी-सी मुस्काई!

एक नहीं,
पूरे दो सौ दस,
जब रसगुल्ले खाए!

तब जाकर
डकार ली उसने,
मुँह पर हाथ फिराए!
उसके बाद पिया छककर रस,
कर ली पेट भराई!

खा-पीकर
फिर बनी परी वह,
अपने पंख सुखाए!
उड़ी बाँध
सपनों का गजरा,
बाल घने लहराए!
बोली, "काम करोगे अच्छे,
दूँगी तुम्हें बधाई!"

चित्र : इंदिरा

भूतभुलैया

वीर के लिए सबसे अच्छा समय होता है शाम का। जब सूरज डूबने और हलका अंधेरा छाने लगता है, तब वह बालकनी में आकर खड़ा हो जाता है। वहां से गली के मोड़ तक दिखाई देता है। वह इंतजार करता है, मम्मी-पापा के दफ्तर से लौटने का। कभी वे साथ-साथ लौटते हैं पापा की लाल कार में, तो कभी-कभी मम्मी पहले आ जाती हैं ऑटो में।

उस दिन भी वीर उनका इंतजार कर रहा था कि नीचे गेट के सामने से एक आवाज आई, "मालिक, नौकर चाहिए?"

वीर ने चौंककर उधर देखा, उसकी ही उम्र का एक लड़का धोती और बंडी में खड़ा था। लड़के ने फिर पूछा, "मालिक नौकर चाहिए?"

वीर को हंसी आ गई। वो कहां का मालिक?

फिर भी टाइम पास करने के ख्याल से उसने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

उस लड़के ने जवाब दिया, "तेनाली!"

वीर ने फिर पूछा, "तेनालीराम?"

लड़का बोला, "नहीं, सिर्फ तेनाली। आपका नाम क्या है मालिक?"

वीर बोला, "वीर! और मैं मालिक नहीं हूं। तुम वहीं रुके रहो। मेरे मम्मी-पापा आने वाले हैं, उनसे पूछ लेना।"

तेनाली ने गेट के और नजदीक आते हुए कहा, "आप भी तो बीरबल

चित्र : जय खोहवाल

नहीं ना, सिर्फ वीर ही हो ना?

तो सुनो, मुझे बड़ों का नौकर नहीं बनना, सिर्फ बच्चों का नौकर बनना है, सिर्फ उन्हीं की चाकरी करनी है।"

वीर ने पूछा, "क्यों-क्यों, ऐसा क्यों?"

तेनाली बोला, "क्योंकि मैं एक भूत हूं। मगर डरो नहीं, मैं अच्छा भूत बालक हूं। आपके बहुत काम आऊंगा। बहुत से काम करूंगा। होम वर्क से लेकर..., स्कूल में आपको हीरो बनाने तक।"

वीर के पेट में गुड़गुड़ी होने लगी। दिल ने कहा, 'वीर, ऐसा मौका दोबारा नहीं आएगा। डील पक्की कर ले।' इसलिए उसने पूछा, "मगर तुम्हारी पगार?"

तेनाली बोला, "बस दो रोटी, सात मिर्चें, एक टमाटर, एक नींबू और थोड़ा गुड़, स्वीट डिश में।"

तेनाली आगे बोला, "तो आ जाऊं या अगला दरवाजा खटखटाऊं?"

वीर बोला, "आ जाओ!"

और अगले ही पल तेनाली उसके सामने खड़ा था। उसे सामने देखकर वीर डर से कांपने लगा। तेनाली उसकी पीठ थपथपाकर बोला, "मालिक डरो मत। मैं आपके मम्मी पापा, दोस्तों को नजर नहीं आऊंगा।"

"चलो पहले आपके लिए हॉरलिक्स बनाकर लाता हूं।" तेनाली रसोई में यूं गया और हॉरलिक्स बनाकर यूं ले आया। तभी मम्मी-पापा आते हुए दिखाई दिए। उसने रोजाना की तरह दौड़कर गेट खोल दिया। उसके हाथ में हॉरलिक्स का कप देखकर मम्मी को बड़ी हैरानी हुई। उन्होंने पीठ थपथपाकर शाबाशी दी।

थोड़ी देर बाद वीर अपने कमरे में लौटा तो देखा, उसका बिखरा बिस्तर, स्टडी टेबल, अलमारी सब व्यवस्थित है और तेनाली फर्श पर बैठा हॉरलिक्स पी रहा है।

वीर ने मुसकराकर पूछा, "मेरा हिस्ट्री का होमवर्क कर लो तेनाली।"

तेनाली बोला, "मालिक किताब दो, पहले उस पाठ को एक बार पढ़ लूं।"

वीर ने किताब खोलकर वह पाठ दिखा दिया और तेनाली जोर-जोर से पाठ पढ़ने लगा। बीच-बीच में थोड़ा डांस करके या अजीब आवाजें निकालकर वीर को हंसा भी देता। पूरा पाठ पढ़ने के बाद तेनाली बोला, "आ जाओ मालिक, कॉपी खोलो। मैं आपका हाथ पकड़कर लिखवाता हूं। बस, आपको हाथ सरकाते जाना है।

वीर ने एतराज करते हुए कहा, "क्यों तुम्हीं लिख दो ना, मुझे नींद आ रही है!"

तेनाली बोला, "मालिक आपकी राइटिंग में ही लिखना है ना, इसलिए?"

और फिर वीर और तेनाली ने मिलकर होमवर्क किया।

होमवर्क पूरा होते ही तेनाली खड़े-खड़े ही खर्राटे लेने लगा। वीर भी बत्ती बुझाकर सो गया.

अगली सुबह तेनाली ने सुबह 6 बजे वीर को जगा दिया और बोला, "मालिक उठो, थोड़ा व्यायाम कर लो। मैं गाना गाकर तुम्हारा हौसला बढ़ाता हूं।"

तेनाली भूत का गाना? एक रोमांच की उम्मीद के साथ वीर जिंदगी में पहली बार अपने कमरे में व्यायाम करने लगा और तेनाली ने पता नहीं किस भाषा में उसे एक तूफानी रफ्तार वाला गाना सुनाया। शायद उसी का असर था कि दोनों आधे घंटे तक नाचते-गाते रहे। फिर वीर जब पसीने से लथपथ हो गया, तो तेनाली बोला, "मालिक अब नहाकर तैयार हो जाओ, और नाश्ता करते समय मेरा हिस्सा भी प्लेट में रखना न भूलना!"

नाश्ते की प्लेट पर वीर को पहले से ज्यादा चीजें डालते देख पापा को थोड़ी हैरानी हुई, तो वीर ने फौरन सफाई दे दी, "पापा आज से एक्सरसाइज शुरू की है ना!"

उस दिन वीर के साथ तेनाली भी स्कूल गया। अच्छा तो यह हुआ कि वीर का बैग उसने ही उठाया। मगर बुरा यह हुआ कि उस दिन क्लास के दो बच्चों के टिफिन खाली मिले।

शाम को तेनाली ने बड़ी मासूमियत से कहा, "मालिक, आज साइंस की टीचर ने क्या पढ़ाया, जरा भी समझ में नहीं आया।"

सो उस रात वीर को साइंस का वह पाठ तेनाली को समझाना पड़ा और आधा पाठ सुनते-सुनते तेनाली खर्राटे मारने लगा।

मगर सुबह 6 बजते न बजते तेनाली ने वीर को जगा दिया और कहा, "मालिक आज ताजी हवा में व्यायाम करेंगे। चलो, सामने वाले पार्क में चलते हैं।"

और पार्क में पहुंचते ही तेनाली ने

अपने लेखक को जानिए

समीर गांगुली : हिंदी बाल साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले समीर गांगुली की कहानियां तकरीबन हर प्रतिष्ठित बाल पत्रिका में स्थान पाती रही हैं। दो दशक तक सार्वजनिक क्षेत्र की एक बीमा कंपनी में नौकरी के बाद अब पूरी तरह से हिंदी विज्ञापन लेखन का कार्य करते हैं।

एक कारनामा किया। वहां खड़े एक कुत्ते के कान पकड़कर उस पर सवार हो गया और बोला, "मालिक तुम दौड़ो। मैं अपनी सवारी के साथ तुम्हारा पीछा करता हूं!"

इस तरह तेनाली आधे घंटे तक वीर को दौड़ाता रहा। वीर पैदल, तेनाली कुत्ते पर सवार।

अगले दिन भी तेनाली ने वीर का जलवा जमाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फुटबॉल के मैदान में वीर से गोल करवाने के लिए कितनों को तो लंगड़ी मारी और टीचर ने जब सवाल पूछे, तो कईयों के मुंह बंद किए या गुदगुदी करके डांट खिलाई।

मगर घर में आकर उसका पूरा बदला लिया। रास्ते में प्रोविजन स्टोर से दो अंडे चुरा लाया और ऑमलेट बनाकर चाव से खाने लगा। एक शाकाहारी के घर में यह अपराध था। लेकिन बाद में उसने किचन को यूं साफ किया कि मम्मी ने आकर वीर को शाबाशी ही दी।

इस तरह दिन मजे से गुजर रहे थे। भूत नौकर ने वीर की जिंदगी बदल दी थी। वीर दिनोंदिन हर क्षेत्र में सुधर रहा था, मगर तेनाली बिगड़ रहा था।

एक दिन आधी रात को सोते हुए पिताजी का कान खींच आया और इस मजाक में बाकी रात भर तेनाली खीं-खीं कर हंसता रहा। फिर एक दिन मछली वाले के यहां से एक मछली चुराने लगा। वीर ने बड़ी मुश्किल से उसे ऐसा करने से रोका। फिर एक दिन तेनाली ने वीर की पैंट को प्रेस करते समय जान-बूझकर जला दिया।

अगले दिन भी तेनाली वीर से कुछ रूठा-रूठा ही रहा। रास्ते में चिकन लॉलीपॉप खाने की मांग करने लगा। वीर ने मना किया, तो उसने वीर का स्कूल बैग पानी में गिरा दिया।

वीर समझ गया कि तेनाली को स्कूल ले जाना खतरे से खाली नहीं है। वह लोगों के बीच आकर नई-नई शैतानियां सीख रहा है। इसलिए उसने घर जाकर तेनाली को खूब डांटा। नौकरी से निकाल देने की धमकी दी और अगले दिन स्कूल भी नहीं ले गया।

वीर दोपहर बाद तब स्कूल से लौटा, तो देखा, फूल के तीन गमले टूटे हुए हैं। घर में गया, तो देखा उसका खाना गायब है। अपने कमरे में गया, तो देखा, मेज पर एक छोटा सा पत्र लिखा है।

यह पत्र तेनाली का था। उसने लिखा था,

'मालिक मैं नौकरी छोड़कर जा रहा हूं!'

पता नहीं, उसने कैसी स्याही से लिखा था कि वीर ने फिर से उसे पढ़ना चाहा, तो कुछ नजर नहीं आया। पन्ना कोरा था।

बस, इसी के साथ दुनिया के सबसे छोटे और विचित्र मालिक-चाकर का रिश्ता समाप्त हो गया।

कलर बॉक्स

रात के नौ बजे थे। रोमा ने अपनी स्केच बुक उठाई और दरवाजे की कुंडी आहिस्ता से खोले और बिना आवाज किए चुपचाप घर से बाहर निकल गई।

पूर्णिमा की रात थी। आसमान में पूरा चांद चमक रहा था। बगीचे में बैठ चांदनी में रोमा ने अपनी स्केच बुक को खोला। एक अधूरी पत्ती का चित्र और पानी का स्केच बना हुआ था। पत्ती आधी ही हरे रंग से भरी थी, आधी खाली, जिसका पेंसिल स्केच दिखाई दे रहा था।

तभी आवाज आई, "रंग की डिब्बी कमल परी ले गई..., कमल परी ले गई..., कमल परी...!"

रोमा ने स्केच बुक बंद कर दी। उसकी आंखों में आंसू की बूंदें आकर ठहर गईं। 'कितना प्यारा कलर बॉक्स था उसके पास। जोसफ ने अपने बर्थडे का रिटर्न गिफ्ट दिया था उसे।'

वह कलर बॉक्स कोई ऐसा-वैसा साधारण रंग वाला नहीं था। जोसफ के पिता डूडू जाने-माने जैव रसायन वैज्ञानिक थे। उन्होंने परीक्षण करके बच्चों के लिए एकदम नए तरह के रंग बनाए थे।

रोमा ने उस कलर बॉक्स की तीन ट्यूब ही खोली थीं। सफेद, लाल और हरी, क्योंकि उसने गहरे हलके गुलाबी रंगत देते हुए कमल का सुंदर फूल बनाया था।

वह सुंदर कमल का फूल अब उसकी स्केच बुक में नहीं है। उसके साथ, जो उसने एक हरे रंग की पत्ती बना रही थी, उसे वह पूरा नहीं कर पाई थी। आधा रंग ही उसमें भर पाई थी कि स्कूल की छुट्टी हो गई थी। हरी पत्ती अभी गीली थी, पर कमल का फूल सूख गया था। नीचे पानी में रंग भरना भी बाकी था। उसने आहिस्ता से स्केच बुक को बंद कर बैग में रख दिया था। साथ में रंग की डिब्बी को भी रखना नहीं भूली थी।

स्कूल की छुट्टी के बाद जब रोमा घर पहुंची और उसने अपनी स्केच बुक खोली तो कमल का फूल गायब था। यह देख उसे आश्चर्य हुआ। कमल का फूल कहां चला गया? ओह! उसने कितनी सुंदर गुलाबी शेडिंग की थी उसमें।

तभी उसका ध्यान अधूरी हरे रंग की पत्ती पर गया। वह बैग से कलर

बॉक्स निकालने लगी। उससे इस अधूरी बनी पत्ती में रंग भरना था। पर यह क्या? डिब्बी तो अंदर थी ही नहीं। वह बुदबुदाई, "मेरी कलर बॉक्स कहां है?"

तभी उसके कानों में एक धीमी आवाज आई, "कलर बॉक्स कमल परी ले गई।"

आश्चर्य से उसने इधर उधर देखा, "तुम कौन हो?"

"मैं अधूरी बनी पत्ती हूं। यदि तुमने मुझ में पूरा रंग भर दिया होता, तो मैं भी कमल के फूल के साथ उड़न छू हो जाती।"

"क्या सच कह रही हो? ऐसा कैसे हो सकता है? मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।"

"तुम्हें विश्वास करना चाहिए। डूडू अंकल के बनाए वे रंग कोई साधारण रंग नहीं थे। जैविक रसायन से बने उन रंगों से जिस भी चित्र में रंग भरा जाएगा, सूखने पर वह निर्जीव वस्तु जीवित हो उठेगी। तुमने केवल मेरी नोक में ही रंग भरा था। इसलिए देखो, मुझ में आधी जान ही आई है। केवल बोलना और देखना ही हो पा रहा है। अगर तुम डंडी तक रंग भर देती, तो मैं भी चलने लगती।"

यह सब सुनकर रोमा को आश्चर्य हुआ, "माना तुम सही बोल रही हो परंतु कमल परी मेरी कलर बॉक्स क्यों ले गई? अब वह मुझे कहां मिलेगी?"

"पूर्णिमा की रात्रि को कमल परी तालाब पर घूमने आती है। मैं तो इतना ही जानती हूं।"

यह सुनकर रोमा घर के अंदर भागी। उसे यह तो मालूम था कि आज 22 तारीख है पर आज पूर्णिमा है, यह कैलेंडर में देखने पर ही पता चलेगा। कैलेंडर पलटा, तो देखा आज ही पूर्णिमा है। जब मम्मी-पापा दोनों सो गए, तब वह तालाब की ओर अकेले ही चल पड़ी। उसके हाथ में स्केच बुक थी और दिमाग में रंग की डिब्बी। चारों ओर चांदनी फैली हुई थी। सर्र-सर्र करती ठंडी हवा चल रही थी। कभी-कभी कोई पत्ता खड़क जाता, कभी कोई कुत्ता कूं-कूं करने लगता। रोमा बहादुरी से आगे बढ़ती जा रही थी।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. विमला भंडारी : केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से बाल साहित्य में पुरस्कृत, राजस्थान की जानी-पहचानी बाल साहित्यकार। साहित्यिक गतिविधियों में ख्याति प्राप्त सलिला संस्था, सलूम्बर की संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक आलेख व कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

तभी उसे लगा उसके पीछे कोई है। उसने मुड़कर देखा, तो अंधेरे में दो आंखें चमकती दिखाई दीं। गौर से देखा, तो वह मोती कुत्ता था। वह सड़क पर घूमता रहता था। कभी कोई रोटी देता, तो खा लेता था। रोमा भी अपने टिफिन की बची रोटी कभी-कभी उसे दे दिया करती थी। मोती नाम भी उसी का दिया हुआ था। उसने कहा, "आओ मोती, कमल परी को ढूंढ़ने में मेरी मदद करो।"

मोती और रोमा दोनों आगे बढ़ने लगे। अब मोती कुत्ता आगे-आगे चल रहा था। रोमा तालाब के किनारे पहुंच गई। तालाब में ढेरों कमल खिले हुए थे। सफेद रंग के कमल और गुलाबी रंग के कमल भी।

रोमा तालाब के किनारे बैठ कमल परी के आने का इंतजार करने लगी। मोती भी उसके पैरों के पास ही बैठ गया। कुछ देर बाद उसने फिर से स्केच बुक निकाली। अधूरी बनी पत्ती बोल उठी, "कमल परी रंग की डिब्बी ले गई..., कमल परी रंग की..., कमल परी...।" तभी एक चमकीली कमल के फूल की रेखा आकृति उसके सामने उभर आई।

बिजली की रोशनी में जगमगाती एक आकृति बनी हुई थी। उसने

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं,
आर्थिक योगदान देकर भी
इस प्रयास में सहयोगी बनें

ध्यान से देखा, यह आकृति कमल के फूल की ही थी। बीच की बड़ी पत्ती में दो आंखें दिखाई दे रही थीं। उसकी डंडी में पत्ती वाली जगह दो पंख लगे हुए थे। जिनके सहारे कमल का फूल हवा में खड़ा था।

रोमा को एक बार तो डर भी लगा और दूसरे ही पल उसने अपने डर पर काबू पा लिया। बोली, "कमल परी, तुम्हारे में मैंने रंग से भरा है। तुम्हें मेरा काम करना चाहिए।"

"मुझे क्या करना होगा ?" कमल की पत्ती पर बनी दो सुंदर आंखें चमकने लगीं।

"मेरा कलर बॉक्स मुझे दे दो। मुझे पत्ती में और तालाब के पानी में रंग भरना है। मैं अधूरा चित्र पूरा करना चाहती हूं। और भी कई सुंदर पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों के चित्र बनाना चाहती हूं। उनमें रंग भरना चाहती हूं और उन्हें जीवित करना चाहती हूं।" रोमा ने कहा।

कमल का फूल बोला, "क्या तुम्हें पता है कि वह कोई साधारण रंग नहीं। तुम्हें शायद मालूम नहीं। वे रंग जैविक रसायन से बने हैं। रंग भरने के बाद जब वह आकृति सूख जाती है, तो वह जीवित हो जाती है।"

रोमा ने कहा, "मैं इस दुनिया में लुप्त हुई सभी चीजों को फिर से बनाना चाहती हूं। प्लीज, तुम मुझे रंग की वह डिब्बी दे दो।"

"मैं भी इस दुनिया में बेहतरीन चित्र बनाना चाहती हूं। यदि तुमने सारे रंग खोल दिए होते, तो मैं तुम्हारे रंग उठाकर नहीं ले जाती।"

रोमा ने कमल परी को पकड़ने की कोशिश की। बिजली की एक तेज रोशनी चमकी, तो मोती कुत्ता भी भौंकने लगा। किंतु यह क्या, कमल परी गायब हो गई। उसने स्केच बुक को उठाकर देखा, अधूरी बनी पत्ती सूखकर मुरझा चुकी थी।

तभी मोती ने नीचे गिरी रंग की डिब्बी मुंह से उठाकर रोमा की ओर आगे बढ़ा दी। वह ख़ुशी से चिल्ला उठी, "मेरी प्यारी रंग की डिब्बी मुझे मिल गई। अब मैं मनचाहे चित्र बनाकर उन्हें जीवित कर सकूंगी।"

वह प्यार से मोती कुत्ते का सिर को सहलाने लगी। रोमा को इस बात का दुख था कि वह जैविक रसायन के रंगों की दुनिया को क्यों समझ नहीं पाई ✪

चित्र : इंदिरा

मॉनीटर का चुनाव

पूरी कक्षा ठसाठस भरी है। लगता है, कोई भी अनुपस्थित नहीं है। हो भी कैसे! आज पहला दिन जो है। इतने दिनों की छुट्टियों के बाद अपने दोस्तों से मिलने का अवसर आया है! अभी शिक्षक कक्षा में आए नहीं है और पवन सभी को चुप करवाने का प्रयास कर रहा है। वह कुछ बच्चों को आगे बैठा रहा है, तो कुछ को पीछे कर रहा है। बहुत से बच्चे उसकी बात मानने को राजी नहीं हैं। वह हल्ला करने को मना करता तो वे हो...हो करने लगते। कक्षा में शोर-शराबा हो रहा है, कोई कागज के रॉकेट बनाकर चला रहा है।

"अरे भाई, पहले दिन ही इतना हंगामा? आने में दो मिनट देर क्या हो गई, आप लोगों ने तो सारे स्कूल को सिर पर उठा लिया?" वंदना मैडम की कड़कती आवाज जैसे ही गूंजी, साठ बच्चों की क्लास में सन्नाटा छा गया। इतनी शांति कि सुई गिरने की आवाज सुन लो।

"मैडम, कोई मेरी बात ही नहीं सुन रहा था। यह राजेश तो मुंह चिढ़ा रहा था और वह अकरम और जोर से हल्ला कर रहा था।" पवन रोंआसा हो गया। पवन पिछले दो साल क्लास का मॉनीटर था। चॉक-डस्टर लाना हो या ऑफिस में कॉपी पहुंचाना, टीचर की अनुपस्थिति में अनुशासन बनाए रखना हो या और कोई काम, पूरे पवन के जिम्मे थे।

"क्यों, क्या छुट्टी के दो महीनों में भूल गए थे कि क्लास में कैसे व्यवहार करना है? और ये पवन की बात कौन-कौन नहीं सुन रहा था? क्यों-क्यों?" वंदना मैडम से वैसे ही सभी बच्चे डरते हैं। आज तो उनका गुस्सा सातवें आसमान पर है। सभी ने सिर नीचे कर लिए।

"राजेश, आप? आपके तो सबसे ज्यादा नंबर आए हैं और आप भी पवन को चिढ़ा रहे थे?" वंदना मैडम के सुर थोड़े शांत हुए। शायद उन्हें भी लगा कि पहले ही दिन बच्चों से इतनी कड़ाई ठीक नहीं है।

राजेश खड़ा हो गया। उसने धीरे से निगाह उठाकर देखा, 'लगता है, मैडम का गुस्सा शांत हो गया है।' मन ही मन उसने सोचा।

"बोलो राजेश आपकी शिकायत क्यों आई?" मैडम ने फिर पूछा।

"मैडम वो बात ऐसी है कि...।"

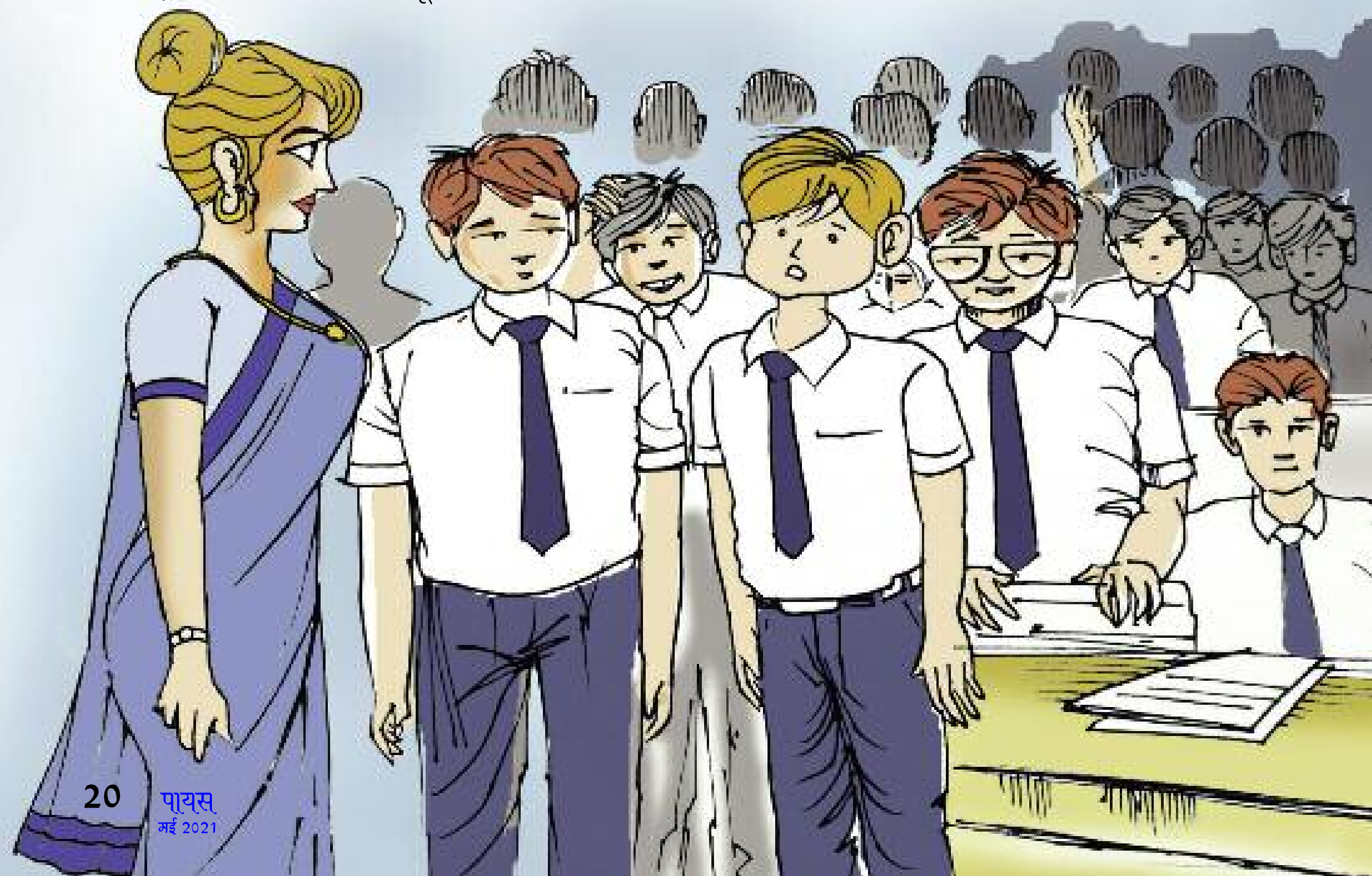

राजेश बोलने में कुछ संकोच कर रहा था।

"हां...हां बोलो, क्या हो गया है आपको?" वंदना मैडम की आवाज में कुछ स्नेह टपक रहा था। इससे राजेश को हिम्मत मिली।

"मैडम मैं बिल्कुल चुपचाप बैठा था। यह जो पवन है, वह मुझसे दुश्मनी मानता है। पिछली से पिछली बार परीक्षा में मुझसे यह एक सवाल पूछ रहा था। मैंने बताया नहीं था, तभी से यह ऐसा ही करता है।" राजेश सरपट रफ्तार में बोल गया।

राजेश का बोलना था कि संजय भी खड़ा हो गया, "मैडम-मैडम, राजेश सही कह रहा है। पवन की बात नहीं मानो, तो वह बोर्ड पर नाम लिख देता है।"

अब तो क्लास में बच्चों की होड़ लग गई, पवन की शिकायत करने की।

वंदना मैडम ने बच्चों को चुप करवाया, "यह अच्छी बात नहीं है, अपने किसी साथी की चुगली नहीं करते।" हालांकि मैडम भी जानती थीं कि पवन गत दो सालों से मॉनीटर है और वह अब ईमानदारी से काम नहीं कर रहा है।

क्लास में हर समय शिक्षक रह नहीं सकता। कई काम ऐसे होते हैं कि वह बच्चों से ही करवाने पड़ते हैं, ऐसे में एक अच्छे मॉनीटर की जरूरत तो होती ही है। जब पवन कक्षा छह में था, तो दूसरे बच्चों से कुछ बड़ा दिखता था। उसके डील डौल से बच्चे डरते भी थे। उसके पिताजी कस्बे की नगर पंचायत के प्रधान भी थे, सो उसे क्लास का मॉनीटर बना दिया गया था। अब दो साल बाद उसकी बहुत शिकायतें आ रही थीं-वह भेदभाव करता है, वह खुद का होमवर्क दूसरे बच्चों से करवाता है और भी बहुत सी। आज जो कक्षा में हुआ, यह उसी का परिणाम था।

मैडम समस्या को समझ चुकी थीं, "चलो-चलो, ये शिकायतें करना छोड़ो। पहला दिन है। नए लोगों से परिचय लेते हैं। बात करते हैं कि छुट्टी में किसने क्या किया।"

और फिर स्कूल की छुट्टी तक बच्चों ने क्लास में खूब मजे किए। नई किताबें देखीं, नए बच्चों से बातचीत हुई। बच्चे तो नए दिन की उम्मीदों के साथ अपने-अपने घर चले गए, लेकिन वंदना मैडम को पूरे साल कक्षा को सही तरीके से चलाने की चिंता सता रही थी। वह समझ गई थीं कि अब पवन के भरोसे बहुत से काम होने से रहे।

अगले दिन बच्चों की हाजिरी हुई और उसके बाद वंदना मैडम ने पूछा, "अच्छा बताओ, कौन-कौन चाहता है कि क्लास में नया मॉनीटर बने?"

पहले कुछ बच्चों ने हाथ खड़ किए, फिर उनकी देखा-देखी कुछ और ने हाथ खड़े कर दिए, फिर तो पूरी क्लास के हाथ ऊपर थे, यहां तक कि पवन के भी।

"पवन आप भी चाहते हैं कि नया मॉनीटर बने?" मैडम ने पूछा।

"जी, मैडमजी, मुझे दो साल हो गए यह काम करते हुए। पहले सब मेरे दोस्त थे। पर, अब देखिए ना क्लास के अधिकांश बच्चे मुझसे दुश्मनी मानने लगे हैं। ऐसी मॉनीटरी से क्या?"

"बात तो आप ठीक कह रहे हैं पवन, लेकिन यह जिम्मेदारी भी तो किसी ना किसी को निभानी ही पड़ेगी ना?" मैडम ने कहा।

"तो इस बार हम आप सभी पसंद का ही मॉनीटर रखेंगे।"

"हमारी पसंद का?" एक साथ कई बच्चों के स्वर निकले, "कैसे कैसे होगा?"

"हम चुनाव के जरिए मॉनीटर का चुनाव करेंगे।" मैडम बोलीं।

अपने लेखक को जानिए

पंकज चतुर्वेदी : आरंभ में पत्रकार, फिर अध्यापन। 'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास' (एनबीटी) में बच्चों की किताबों के संपादक हैं। रोजाना किसी न किसी अखबार में कॉलम लिखते हैं। कहानीकार तो अच्छे हैं ही, एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी अनुकरणीय। पंकज ने कोरोना संकट में लोगों तक सहायता पहुंचाने के लिए खूब काम कर रहे हैं।

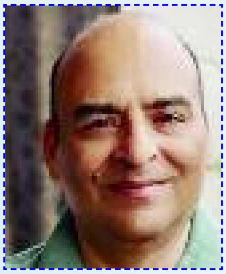

"चुनाव! जैसे प्रधानमंत्री वाला चुनाव हुआ था अभी?" कैलाश ने पूछा।

"हां-हां वैसा ही चुनाव, लेकिन बेटे, हमने प्रधानमंत्री का चुनाव नहीं किया था। जनता तो अपना सांसद चुनती है और सांसद प्रधानमंत्री।" मैडम ने समझाया।

"यानी हम वोट डालेंगे, हम भी मॉनीटर बन सकते हैं। सुनो, हम तो रजनीश को अपना मॉनीटर बनाएंगे।" ऐसे ही कई सवाल कक्षा में गूंजने लगे।

'शोर नहीं, और आप किसको चुनोगे, यह बताना गलत बात है। वोट हर समय गोपनीय रहता है। और याद रखें, जो ईमानदारी से काम करना चाहे, जो भेदभाव ना करे, वही आगे आए। आप लोगों के पास एक घंटा है, खुद ही तय कर लें कि कौन-कौन मॉनीटर बनना चाहता है। कल हम चुनाव करेंगे।" यह कहते हुए वंदना मैडम क्लास से बाहर निकल गईं।

अब बच्चों के गुट बन रहे थे। कोई खुद को खड़ा बता रहा, था तो कोई अपने दोस्त को मॉनीटर बनता देखना चाहता था। इतने हंगामे में

पवन एक कोने में बैठा था, उसके दो-तीन दोस्त साथ थे। “देखना अभी जितना कूद रहे हैं ना, जब मॉनीटर बन जाएंगे, तब समझ आएगा।” पवन बोला।

पता ही नहीं चला कि कब एक घंटा निकल गया और वंदना मैडम, कुरैशी सर के साथ क्लास में आ गईं, “ तो बताओ, कौन-कौन बनना चाहता है मॉनीटर?”

सबसे पहले फहीम खड़ा हुआ, फिर राजेश, नमन और गुरमीत भी।

“तो आप चार लोग मॉनीटर बनना चाहते हैं?” कुरेशी सर ने पूछा।

“जी।” चारों एक साथ बोले ।

“एक बात याद रखें, जिसने आज हां कर दिया, वह कल ना नहीं करेगा। और मॉनीटर बनने के काम से घबराकर बीच में पद छोड़कर भागेगा भी नहीं! ठीक है ना!” मैडम ने चारों से पूछा।

“जी हां।” चारों बच्चों ने जवाब दिया।

“चलो, चारों बच्चे एक कागज पर लिखकर दो कि मॉनीटर का चुनाव लड़ना चाहते हो। प्रत्येक आवेदन पर कम से कम दो बच्चों के हस्ताक्षर भी होंगे कि वे समर्थन करते हैं।” कुरेशी सर ने कहा।

क्लास में कभी इतनी स्वतंत्रता मिली नहीं थी और ना ही यह सब कुछ हुआ था, सो बच्चे बड़े उत्साह में थे। चुनाव लड़ने वाले बच्चों के पास उनके दोस्त-समर्थक पहुंच गए थे और होड़ लगी थी कि कौन किसका समर्थक बनकर हस्ताक्षर करेगा।

‘कल हम प्रार्थना के बाद ही नया मॉनीटर चुन लेंगे। याद रखें, कल कोई छुट्टी नहीं करेगा। आज आप लोगों को छूट दी जाती है कि अपने दोस्तों को समझाएं कि आप ही मॉनीटर क्यों बनेंगे। बस, याद रखना कि आपके हल्ले-गुल्ले से दूसरी कक्षाओं में व्यवधान ना हो।” मैडम व सर यह कहते हुए क्लास से बाहर निकल गए।

फहीम, राजेश, नमन और गुरमीत, चारों के साथ कुछ-कुछ बच्चे थे। फहीम ने पुराने मॉनीटर पवन को ही पकड़ लिया और पवन अपने साथियों से फहीम का समर्थन करने को कहने लगा। गुरमीत बच्चों को कह रहा था कि जो उसे वोट देगा, उसे वह अपनी गाड़ी में बैठाकर स्कूल लाया करेगा। राजेश लालच दे रहा था कि उसका साथ देने वालों को वह गोलगप्पे खिलाएगा। नमन भी कहां पीछे रहता, उसने कह दिया कि यदि उसका साथ नहीं दिया, तो वह किसी को भी अपने होम वर्क की

चित्र : सुशील दोषी

कॉपी नहीं देगा।

कोई लालच दे रहा था कि उसके राज में हल्ला करने वालों या देर से आने वालों के नाम वह टीचर को नहीं बताएगा। कोई चुपके से टेस्ट पेपर के नंबर बताने का झांसा दे रहा था। अपने बड़े भाई-बहनों से दोस्ती, पड़ोस में रहने, पुरानी दोस्ती जैसी बातें भी याद करवाई जा रही थीं।

स्कूल की छुट्टी के बाद कुछ बच्चे एक-दूसरे के घर भी पहुंच गए। अब यह बात स्कूल की दूसरी कक्षाओं व उसके जरिए छोटे से कस्बे में फैल गई कि स्कूल की कक्षा आठ में इलेक्शन होने वाले हैं। हालांकि बच्चों में यह भी चर्चा थी कि आखिर इन चारों में से एक को चुना कैसे जाएगा? डर था कि कहीं टीचर ने सबके सामने हाथ खड़े करने को कह दिया, तो बाकी तीन नाराज हो जाएंगे। बच्चों को इस बात का डर भी था और मन में जिज्ञासा भी थी कि आखिर चार में से एक कैसे मॉनीटर बनेगा? कहीं मैडम ने पिछले रिजल्ट के अच्छे नंबर वाले को बना दिया तो? कहीं हेडमास्टरजी ने अपने मर्जी से चुन लिया तो?

ऐसे ही कई सवालों के साथ बच्चों की सुबह हो गई और अधिकांश बच्चे समय से पहले स्कूल भी पहुंच गए। आज तो कक्षा आठ के बाहर दूसरी कक्षा के बच्चे भी तांक-झांक कर रहे थे।

कक्षा में कुरेशी सर के साथ वंदना मैडम पहुंचीं। उनके हाथ में एक बड़ा सा डिब्बा भी था। जल्दी से बच्चों की हाजिरी ली गई। उसके बाद चारों बच्चों को सामने बुलाया गया।

"अब आप चारों को तीन-तीन मिनट में यह बताना है कि आप ही क्यों सबसे अच्छे मॉनीटर साबित होंगे।" कुरेशी सर ने कहा।

"मुझे पुराने मॉनीटर का समर्थन मिला है। वह मुझे आगे भी सहयोग करेगा, इसलिए मैं अच्छा मॉनीटर बनूंगा।" फहीम ने ऐसा ही कुछ भाषण दिया। राजेश ने भाषण में कहा कि उसे हर बार परीक्षा में सबसे ज्यादा नंबर मिलते हैं, इसलिए उसे मॉनीटर बनना चाहिए।

"मुझे कोई डरा नहीं सकता। मैं ईमानदारी से ऊधम करने वाले बच्चों के नाम लिखूंगा। और मैं ताकतवर भी हूं, बहुत सारी कॉपी-किताब एक साथ उठाकर मैडम जी की टेबल तक पहुंचा सकता हूं।" गुरमीत अपनी बांह के डोले दिखाकर बोला और क्लास ठहाकों से गूंज गई। नमन तो इतने बच्चों के सामने कुछ बोल ही नहीं पाया ।

"एक बात जान लें कि मॉनीटर कोई राजा नहीं है। वह अपनी मनमर्जी कुछ नहीं कर सकता। वह तो कक्षा की समस्याओं को टीचर तक पहुंचाने का माध्यम होता है। कक्षा में बहुत से काम, जो अकेले शिक्षक नहीं कर पाते, उनकी मदद करने के लिए मॉनीटर होता है। यदि आप कुछ करना चाहते हैं, अपनी पढ़ाई-खेल के साथ-साथ अपने मित्रों के लिए, अपने स्कूल के लिए, तो ही मॉनीटर बनने की सोचें।" वंदना मैडम ने समझाया।

"अब हम चुनाव के जरिये अपना मॉनीटर चुनेंगे। सभी बच्चे एक-एक कर चुपचाप एक पर्ची पर अपने पसंद का नाम लिखेंगे व उस डिब्बे में डाल देंगे। जिसे सबसे ज्यादा लोग पसंद करेंगे, वही मॉनीटर होगा।" कुरेशी सर ने बताया।

"मैडम, मेरे मन में एक सवाल है, क्या पूछ सकता हूं?" नमन थोड़ा डरा हुआ लगा रहा था।

"हां-हां जरूर।" मैडम ने उसकी हिम्मत बढ़ाई।

"मैडम हम चार में से कोई एक ही मॉनीटर बनेगा ना? जिसे सबसे ज्यादा बच्चे पसंद करेंगे!"

'हां, यही होगा। यही तो होता है चुनावों में जिसे सबसे ज्यादा वोट मिलते हैं, वही जीतता है।"

"तो फिर, वह सबकी पसंद का मॉनीटर कैसे होगा? मान लो, यदि फहीम जीत जाता है, उसे तो मैंने वोट दिया ही नहीं, तो वह मेरी पसंद का कैसे हुआ?"

"देखो बेटे, दुनिया में सब कुछ हमारी मर्जी से नहीं होता। कुछ जगह हमें दूसरों की भावनाओं का भी सम्मान करना होता है। बहुमत का अर्थ यह हुआ कि जिसे सबसे ज्यादा लोगों ने पसंद किया। और फिर इस चुनाव का मतलब यह तो हुआ नहीं कि फहीम या गुरमीत या राजेश से आपका झगड़ा हो गया। यह तो एक खेल है। मान लो कि आपसे ज्यादा किसी दूसरे को ज्यादा लोग पसंद करते हैं।" कुरेशी सर ने लोकतंत्र के सही मायने समझाने का प्रयास किया।

इसके बाद हाजिरी रजिस्टर से एक-एक बच्चे का नाम पुकारा गया। छात्र आते, दूर टेबल की आड़ में अपने पसंद के बच्चे का नाम लिखते और डिब्बे में डाल देते। कुरेशी सर के पास हरे रंग का पेन था, जिससे वह हर बच्चे की उंगली पर निशान बना देते। बच्चों को याद आया कि ऐसा ही नीला-काला निशान उनके माता-पिता की उंगली पर चुनाव में लगाया गया था।

अब इस चुनाव के परिणाम क्या हुए? यह तो गिनती के बाद ही पता चलेगा। लेकिन वंदना मैडम ने एक बात कह दी, "अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद ना जीत पाए बच्चों से एक बार फिर बात की जाएगी। यदि वर्तमान मॉनीटर के काम से सभी संतुष्ट नहीं हुए, तो एक बार फिर चुनाव होगा। वह चुनाव होगा, इस बात के लिए कि क्या इस मॉनीटर की जगह नए का चुनाव किया जाए या नहीं!

परियां होती हैं क्या?

अनिल जायसवाल

आज नीलू बहुत खुश थी। उसके पापा-मम्मी एक मंदिर गए थे, जहां मोबाइल ले जाना की इजाजत नहीं थी। ऐसे में नीलू ने पापा से मोबाइल मांग लिया था, गेम खेलने के लिए। छुट्टियां चल रही थीं और नीलू कभी जिद करती भी नहीं थी, इसलिए पापा ने खुशी-खुशी उसे मोबाइल पकड़ा दिया।

नीलू ने मोबाइल ऑन ही किया था कि व्हाट्सएप पर एक ग्रुप का मैसेज आया, जिस पर लिखा था 'परी'। नीलू को उत्सुकता हुई। उसने ग्रुप को खोल लिया। यह हिंदी का 'बाल साहित्यकार पटल' था। उस पर आज परी की कहानियां लिखी जा रही थीं।

नीलू को बढ़िया लगा और वह कहानियां पढ़ने लगीं। पहली कहानी कुछ ऐसी थी कि कुछ बच्चे एक परी को तंग करते हैं, तो परी परेशान होकर धरती छोड़कर चली जाती है। फिर बच्चे अच्छा काम करते हैं, तो परी उनसे मिलने दोबारा धरती पर आती है।

कहानी पढ़कर नीलू सोच में डूब गई। फिर वह दौड़ी-दौड़ी दादी के पास गई, "दादी-दादी क्या सचमुच परियां होती है?"

दादी ने मुसकराते हुए नीलू को गोद में बैठा लिया। फिर पूछा, "तुम्हें क्या लगता है बेटी?"

"मम्मी मुझे परियों की कहानी सुनाती हैं, पर पापा कहते हैं, सच में परियां नहीं होतीं। आप ही बताओ सच क्या है?" नीलू ने जिज्ञासा से पूछा।

दादी ने मुसकराते हुए कहा, "बेटी, बहुत बार इनसान खुश होने के लिए कुछ कल्पनाएं करता है और उस कल्पना से ही उसे आनंद आता है और थोड़ी देर के लिए वह अपने दुख भूल जाता है। ये परियां भी कल्पना है।"

"इसका मतलब दादी, परियां नहीं

चित्र : जय खोहवाल

होती।" नीलू ने धीरे से कहा।

" मैंने ऐसा कब कहा बेटी? जब कोई हमारी सहायता करता है, तो वह हमारे लिए बहुत खास हो जाता है। खुश होकर कभी हम उसे भगवान का नाम देते हैं, तो कभी परी का नाम दे देते हैं। ये जो परियां होती हैं, जिनकी कहानी तुम्हें मम्मी सुनाती हैं, वे तुम्हें अच्छी बातें बताती हैं। तुम्हें अच्छा बनाती हैं।"

"हां दादी, मैंने अभी इंद्रजीत कौशिक अंकल की कहानी पढ़ी। उसमें परियों से मिलने के लिए बच्चे अच्छा काम करते हैं। इसलिए परी भी उनसे मिलने वापस आ जाती हैं।" नीलू ने उत्साह से बताया।

"सच बात है बेटा। जब आप दिल से कुछ अच्छा करते हो, तो आपको उसका फल जरूर मिलता है। जो आपके लिए अच्छा करता है, वह आपके लिए परी, आप जिसके लिए अच्छा काम करोगी, उसकी लिए आप परी।"

"मतलब, अगर मैं दिल से अच्छा करूंगी, तो सचमुच परी आएगी मेरे से मिलने, या मैं परी बन जाऊंगी?" नीलू ने अपने बड़ी-बड़ी आंखें फैलाते हुए पूछा।

"ऐसा करो, तुम कुछ अच्छा काम करके देखो। फिर मुझे बताना।" दादी ने प्यार से कहा।

नीलू अपने कमरे में वापस आ गई। अब मोबाइल में उसका दिल नहीं लग रहा था। वह बालकनी में जाकर बाहर देखने लगी। वहां एक भिखारिन अपने छोटे से बेटे के साथ भीख मांग रही थी। उसका बेटा भूख से कुलबुला रहा था। उसकी मां उसे किसी तरह चुप करा रही थी।

नीलू समझ गई कि बच्चे को भूख लगी है। उसे और कुछ समझ नहीं आया, तो वह भागकर किचन में गई। वहां ब्रेड का आधा पैकेट पड़ा हुआ था। साथ ही बटर भी रखा था। कुछ सोचकर नीलू ने ब्रेड और बटर को उठाया और भागती हुई बालकनी में आ गई। उसने ऊपर से ही आवाज लगाई, "हेलो।"

नीचे वाले छोटे से बच्चे ने इधर-उधर ताका। उसे कोई नजर नहीं आया, तो वह फिर से रोने लगा।

"अरे, मैं इधर ऊपर हूं।" नीलू ने फिर आवाज दी।

अब बच्चे ने गर्दन ऊंची कर नीलू की तरफ देखा। नीलू ने मुसकराते हुए अपने हाथ में पकड़े हुए ब्रेड और बटर को उस बच्चे की तरफ उछाल दिया। बच्चे ने फटाफट ब्रेड के पैकेट

को खोला और हाथ से ही मक्खन लगाकर गपागप खाने लगा।

उसे चुप होकर फटाफट खाते देख नीलू को बहुत खुशी महसूस हुई। पर बच्चे की मां ने जब देखा, तो वह बेटे को खाने से रोकने लगी।

नीलू ने ऊपर से आवाज लगाई, "आंटी, इसे मैंने ब्रेड दिया है। इसे खाने दो प्लीज। इसे जोरों की भूख लगी है।"

भिखारिन ने गीली आंखों से नीलू की तरफ देखा, मानो आशीर्वाद दे रही हो। पता नहीं क्यों, उस समय नीलू को बहुत अच्छा लगा।

तब तक नीलू के मम्मी-पापा मंदिर से आ चुके थे और वे घर में घुसने वाले ही थे। उन्होंने नीलू को उस बच्चे को ब्रेड-बटर देते देख लिया था। अपनी बेटी की दयालुता देखकर उन्हें बड़ी खुशी हुई।

वे मुसकराते हुए घर में घुसे। मम्मी-पापा को देख नीलू खुशी से चिल्लाई, "पापा, मैंने आज आपके मोबाइल पर परियों की कहानियां पढ़ीं। मैंने दादी से भी पूछा। अब आप और मम्मी मुझे बताओ कि सच में परियां होती हैं या लोग ऐसे ही लिख देते हैं?"

"होती हैं भाई, परियां होती हैं। लेकिन वैसी नहीं, जैसी तुम फोटो में देखती हो या इस मोबाइल में दिए गए चित्र में है, पीछे पंख लगाकर उड़ती हुई।"

"तो कैसी होती है पापा?" नीलू ने उलझन भरे स्वर में पूछा।

"बिल्कुल तुम्हारी जैसी। जरा बताओ तो, परियों का काम क्या होता है?" पापा ने प्यार से पूछा।

"बच्चों की मदद करना।" कुछ उलझन में नीलू ने जवाब दिया।

"और आज तुमने क्या किया?"

"मैंने क्या किया?" नीलू ने आश्चर्य से पूछा। उसे नहीं पता था कि पापा ने उसे ब्रेड-बटर उस बच्चे को देते देख लिया था।

"तुमने आज एक भूखे बच्चे को खाना खिलाकर उसे बहुत खुशी दी। तो, आज उस बच्चे के लिए तुम किसी परी से कम नहीं। जो किसी के भी काम आए, किसी को भी खुशी दे, वही परी है।" पापा ने मुसकराते हुए कहा।

"ओह हो। फिर तो मैं भी परी हूं।" कहते हुए नीलू खुशी से नाचने लगी।

सूरज की धूप

कितने किलो धूप धरती पर
सूरज है फैलाता,
ठेले पर या काँधे पर रख
संग धूप को लाता!

कैसे रोज समेटे इसको
वापस यह ले जाए,
कोई इक्का, कोई गाड़ी
मुझे नज़र ना आए।

या फिर इसको छोड़ यहीं पर
रोज नई ले आता,
पहले वाली बुझा फूँक से
सूरज गुम हो जाता!

अपने लेखक को जानिए

डॉ. अनुपमा गुप्ता : पेशे से डॉक्टर। बाल रचनाओं के लिए प्रेरणा बच्चों से ही लेती हैं। अपने चारों और बिखरी प्रकृति, इंसानों और जानवरों से भी प्रेरणा पाकर कविताएं लिखना बहुत भाता है।

चिड़िया रानी

चीं चीं करती चिड़िया रानी।
कहती दुख से भरी कहानी।
पेड़ कहीं पर बचे नहीं है,
कहां चुगें हम दाना-पानी।

कहती हमसे दादी-नानी।
बातें हमने उनकी मानी।
छत पर नित दाने बिखराते,
कुंडे में भर रखते पानी।

अपने लेखक को जानिए

उदय मेघवाल 'उदय' : जोधपुर से टेक्सटाईल में डिप्लोमा। साहित्य के प्रति स्वाभाविक रुचि है। अब तक कुछ रचनाएं प्रकाशित। गीत, गजल, बाल कविताओं में विशेष रुचि।

परी का घर

नहीं लिखा है पता कहीं भी गुस्सा आता है मुझको
कहाँ परी का घर है ? कोई नहीं बताता है मुझको।

चंदा पर है उसका घर या है सूरज के शोले पर
आसमान में रहती है तो रहती है किस गोले पर?

पानी के अंदर रहती है या वह रहती है भू पर
पेड़ों पर रहती है या फिर किसी पहाड़ी के ऊपर?

ना रातों में दिखी कभी वह ना ही दिखी उजालों में
जादू वाली छड़ी हमारे रहती सदा ख़यालों में।

पता नहीं किस दुनिया के किस हिस्से में वह रहती है
लगता है बस दादी जी के किस्से में वह रहती है।

चित्र : सुशील दोषी

अपने लेखक को जानिए

शादाब आलम : बाल साहित्य की लगभग सभी विधाओं के साथ मुख्य रूप से बाल कविता एवं बाल गीत लेखन। हंसी का चूरन (बालकाव्य संग्रह) लोकोदय प्रकाशन से प्रकाशित।

नीले ग्रह पर परियां

सलोनी परी को परीलोक की परिधि के उस पार वाला वह नीला ग्रह बहुत लुभाता है। वह अपनी सहेलियों के साथ वहां घूमने जाना चाहती है। उसने कई बार रानी परी से वहां ले चलने का आग्रह भी किया लेकिन उन्होंने टाल दिया।

"उस ग्रह का नाम पृथ्वी है। वह बहुत सुंदर जगह है। तुम सबको वहां बहुत मजा आएगा, लेकिन कुछ दिन ठहर जाओ। अभी वहां कोरोना नाम की भयानक महामारी फैली है। जब वहां सब सामान्य हो जाएगा तब हम वहां घूमने चलेंगे।" रानी परी ने उससे वादा किया था।

सलोनी परीलोक में सबकी चहेती है और रानी परी की बहुत लाडली भी। आज वह अपनी सहेलियों के साथ रानी परी के सामने खड़ी थी।

"रानी परी! अब तो कोरोना महामारी लगभग समाप्त हो चुकी है। आपने वादा किया था कि जब पृथ्वीलोक पर सब सामान्य हो जाएगा, तब आप हमें वहां घुमाने ले जाएगी।" सलोनी ने उन्हें याद दिलाया। रानी परी मुसकुरा दी।

"मुझे अपना वादा याद है। हालांकि पृथ्वी की हालत इस कोरोना के कारण पहले से भी ज्यादा खराब है। फिर भी हम सब आज शाम को पृथ्वीलोक पर चलेंगे।" रानी परी ने कहा, तो सब परियां खुशी से उछल पड़ीं।

"सब लोग अपने मुंह पर मास्क लगाएंगे और अपने पास सैनिटाइजर भी रखेंगे। पृथ्वी पर खतरा और बढ़ गया है।" रानी परी ने उन्हें याद दिलाया। सबने हामी भरी और रात होते ही परियों का काफिला पृथ्वी की तरफ चल दिया।

वे सब एक महानगर में उतरी, जो कि समुद्र के किनारे बसा हुआ था। मुसकराती परियों ने अपने पंख समेटे और साधारण इंसान की तरह शहर में घूमने लगी। नन्ही परियां इतनी ऊंची-ऊंची इमारतें देखकर हैरान थीं।

"क्या परीलोक तक जाने के लिए इंसानों ने सीढियां बना ली?" एक बहुमंजिला इमारत को देखकर सलोनी ने पूछा, तो रानी परी उसकी मासूमियत पर मुस्कुरा दी।

"नहीं, पृथ्वी पर जनसंख्या बहुत अधिक हो गई है। अब उन्हें रहने के

चित्र : सुशील दोषी

लिए कम जमीन पर अधिक घरों की जरूरत है। इसलिए वे बहुमंजिला इमारतें बनाने लगे हैं।” रानी परी ने समझाया।

घूमते-घूमते सबने देखा कि शहर के पार्क सूने पड़े हैं। सड़कों और गलियों में भी बच्चे कहीं दिखाई नहीं दे रहे।

“सब बच्चे कहां गए?” नील परी ने पूछा, तो किसी के पास इसका कोई जवाब नहीं था। तभी लाल परी जोर से चिल्लाई, “वो देखो, सारे बच्चे तो वहां जमा हैं।”

सबने देखा। सचमुच बच्चों का झुंड एक मैदान में जमा था। परियां उनके साथ खेलने के लिए खुशी-खुशी उनकी तरफ बढ़ीं। लेकिन ये क्या? किसी ने उनकी तरफ देखा तक नहीं। सब बच्चे एक डिबियानुमा खिलौने से खेल रहे थे, लेकिन अकेले-अकेले। सबके पास उनका अपना खिलौना था। अधिकांश बच्चों की आंखों पर चश्मा चढ़ा हुआ था और वे स्वस्थ भी नहीं लग रहे थे।

“इन्हें क्या हो गया? क्या सब बीमार हैं?” सलोनी परी ने दुखी होते हुए पूछा।

“कोरोना महामारी से बचने के लिए पृथ्वी पर सामाजिक दूरी का नियम बनाया गया था। लॉकडाउन के कारण स्कूल बंद थे, इसलिए बच्चे घर पर मोबाइल से पढ़ाई करते थे। अब शायद बच्चों को इसकी आदत हो गई और ये मैदान में दोस्तों के साथ खेलना भूल गए। इन्हें याद दिलाना होगा वरना इनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होगा।” रानी परी बोलीं।

“कुछ कीजिए ना!” नील परी ने आग्रह किया।

रानी परी ने कुछ सोचा और अपनी सुनहरी छड़ी निकालकर बच्चों की तरफ गोल-गोल घुमा दी। अचानक ही सभी मोबाइल नेटवर्क ठप्प हो गए। मोबाइल सचमुच की डिबिया बन गए। बच्चों ने कुछ देर तो नेटवर्क के वापस आने का इंतजार किया लेकिन जब बहुत देर तक भी नेटवर्क नहीं आया, तो वे बेचैन हो गए। कोई मोबाइल को हाथ से थपकी देकर नेटवर्क चालू करने की कोशिश कर रहा था, तो कोई उसे स्विच ऑफ करके वापस चालू कर रहा था। कोई उसे हवा में लहरा रहा था। लेकिन नेटवर्क को तो नहीं आना था और वो नहीं ही आया।

परेशान बच्चे चिड़चिड़ा रहे थे, बेचैन हो रहे थे। गुस्से में आए एक बच्चे ने वहां मैदान में पड़ी बॉल को पांव से जोरदार ठोकर मारी। बॉल उछली और इससे पहले कि जमीन पर गिरती, दूसरे बच्चे ने उसे लपक लिया। उसने उछाली, तो तीसरे ने और फिर चौथे ने। अब तो ये सिलसिला चल पड़ा। बच्चे खेलने में ऐसे मगन हुए कि कुछ समय के लिए मोबाइल को भूल ही गए।

परियां उन्हें खेलते देखकर ताली बजाने लगीं। उनकी तालियों ने बच्चों को और भी अधिक उत्साहित कर दिया। वे और भी अधिक ताकत के साथ बॉल को उछालने लगे। थोड़ी ही देर में सब पसीने-पसीने हो गए और थककर घास में बैठ गए।

परियों के भी वापस लौटने का समय हो गया था। रानी परी के इशारा करते ही सबने अपने पंख निकाल लिए। तभी अचानक सब मोबाइल टनटनाने लगे। रानी परी ने उनका नेटवर्क जो चालू कर दिया था।

मोबाइल की आवाज सुनते ही बच्चे अपने-अपने फोन संभालने लगे।

“दोस्तों, मैं क्या कहता हूं। कल से हम सब हर रोज इसी तरह एक घंटा यहां मैदान में खेला करेंगे। क्या तुम सब राजी हो?” एक बच्चे ने कहा, तो सबने उसकी हां में हां मिलाई।

सलोनी और उसकी सहेलियां परियां खुशी से नाचने लगीं। रानी परी भी खुश थीं। ✪

अपने लेखक को जानिए

आशा शर्मा : राजस्थान सरकार के विद्युत विभाग में सहायक अभियंता। साथ ही लेखन भी। अब तक 6 संग्रह प्रकाशित। करीब बीस पत्र-पत्रिकाओं में सैंकड़ों रचनाएं प्रकाशित। राजस्थान साहित्य अकादमी एवं जिला प्रशासन, बीकानेर सहित दर्जनों राष्ट्रीय स्तर के सम्मान एवं पुरस्कार। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर रचनाएं प्रसारित। रचनाओं का नेपाली, अंग्रेजी, पंजाबी, उड़िया, सिंधी, कन्नड़, तमिल एवं राजस्थानी भाषा में अनुवाद

परी सब ठीक कर देगी

जिया अपना तकिया कलाम कैसे भूल सकती है! जतिन और लता यही सोच रहे थे। जिया ने कहा था, "पता नहीं। अब क्या होगा?" उसने अपना रिपोर्ट कॉर्ड जतिन को पकड़ा दिया था।

जतिन ने रिपोर्ट कॉर्ड गौर से देखा। फिर लंबी सांस लेते हुए कहा, "जिया। तुम्हें यह स्कूल छोड़ना होगा। अब तुम्हें सिक्सथ में एडमिशन नहीं मिलेगा।"

जिया ने दोहराया, "पता नहीं। अब मेरा क्या होगा?" दरअसल, जिया को इस बार कुल चालीस फीसदी अंक मिले थे। गणित, हिंदी और अंग्रेजी में तो उसे छत्तीस फीसदी नंबर भी नहीं मिले थे।

"डोंट वरी जिया। तुम्हारी परी है न, वह सब ठीक कर देगी।" जतिन यह कहना चाहता था। लेकिन नहीं कहा।

तभी लता बोली, "डोंट वरी जिया। ये नहीं, तो किसी दूसरे स्कूल में तुम्हारा एडमिशन हो जाएगा। जाओ। मुंह-हाथ धो लो। चेंज करो। मैं तब तक तुम्हारे लिए कुछ अच्छा-सा बनाकर लाती हूं।" यह कहकर लता किचन में चली गई। वहीं जतिन बीते दिनों में खो गए।

'डोंट वरी। मेरी परी है न। सब कुछ ठीक कर देगी।' न जाने कब और कैसे छुटपन से जिया की जुबान पर यह वाक्य चढ़ गया था। वह बात-बात में यही कहा करती थी। जतिन ने तब भी कहा था, "जिया, मेरी बच्ची। छोटी-छोटी बातों पर परी को परेशान नहीं करते। अपना काम खुद करते हैं।"

यह सुनते ही लता हमेशा एक ही बात कह देती, "आप भी न। मदद मांगना बुरा नहीं है। उसकी परी मदद कर देती है। यह तो अच्छा ही है!"

जतिन ने कई बार कहा, "जिया, कभी हमें भी अपनी परी से मिलाओ।"

जिया जवाब देती,"परियां बड़ों से नहीं मिलतीं। वे तो बच्चों की दोस्त होती हैं।"

घर में जब कभी कोई कहता, "जिया। दूध पिओ। इसे पीने से बुद्धि बढ़ती है। तभी तो स्कूल में अच्छे से सीखोगी!"

जिया जवाब देती, "डोंट वरी। मेरी परी है न। सब कुछ ठीक कर देगी।"

कभी कोई जोर से कहता,

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

"जिया। उठो। सुबह हो गई है। वरना, सूरज नाराज हो जाएगा।"

जिया जवाब देती, "डोंट वरी। मेरी परी है न। वो सूरज को खुश कर देगी।"

जतिन को याद आया। वह पहला दिन था। जब जिया स्कूल गई थी। उसे समझाया गया, "ठीक से रहना। कोई गलत बात मत कहना।"

जिया बोली थी, "डोंट वरी। मेरी परी है न। वहे सब सही कर देगी।"

समय के साथ-साथ जिया ने पढ़ना सीखा, लिखना सीखा। फिर, एक दिन की बात थी। जिया को समझाया गया, "जब देखो, तुम मोबाइल पर झुकी रहती हो। कंप्यूटर पर भी तुम गेम्स ही खेलती हो। तुम पढ़ती कब हो? ऐसे अगली क्लास में कैसे जाओगी?"

जिया ने कहा था,"जैसे फर्स्ट से सेकंड में आई थी। वैसे ही अब सेकंड से थर्ड में चली जाऊंगी। सिंपल। डोंट वरी। मेरी परी है न। सब कुछ ठीक कर देती है।"

अब तो लता को भी जिया का हर बात पर परी पर भरोसा करना अजीब लगने लगा था। उसने भी कई बार यह कहना चाहा, 'मेरी बच्ची! परियां किस्सों-कहानियों और कॉर्टून फिल्मों में ही अच्छी लगती हैं। हकीकत की दुनिया में ये नहीं होतीं।' लेकिन यह सोचकर नहीं कहा कि सही समय पर यह बात जिया को खुद ही समझ आ जाएगी।

एक दिन जिया रिपोर्ट कॉर्ड लेकर घर आई थी। वह चहकते हुए बोली थी, "मम्मी। देखो। अब मैं फोर्थ में चली गई हूं। मैंने कहा था न। डोंट वरी। मेरी परी सब कुछ ठीक कर देती है।" लता बस मुसकरा दी थी। वह रिपोर्ट कॉर्ड देखते हुए सोचने लगीं, 'स्कूल, टीचर्स और खुद तुम्हारी मेहनत। इन कारणों से तुम आगे बढ़ रही हो। कभी न कभी इस बात को तुम जरूर समझोगी।'

समय बीतता रहा। जिया चौथी में पढ़ने लगी। परी सब कुछ ठीक कर देगी। यह बात थी कि जिया से छूटती ही नहीं। पूरा साल बीत गया। छमाही के बाद सालाना इम्तिहान भी हो गए। फिर परिणाम आया। अब जिया पांचवी में चली गई। इस साल भी कई मौके आए, जब जिया ने कहा था, "डोंट वरी। मेरी परी है न। सब कुछ ठीक कर देगी।" पांचवी कक्षा का पूरा साल भी बीत गया। परीक्षा भी हो गई। फिर परीक्षा परिणाम भी आ गया। जिया इस बार गुम सुम-सी घर लौटी थी। जिया की परी ने सब कुछ ठीक कहां किया! वह

स्कूल में बने रहने के लिए कम से कम नंबर भी नहीं ला पाई थी।

तभी लता आ गई और जतिन का ध्यान बीती बातों से हट गया।

अगले दिन जतिन ने कहा, "जिया के लिए मैंने दूसरा स्कूल देख लिया है। अब जिया ऐसे स्कूल में पढ़ेगी, जहां बच्चों को अहमियत दी जाती है। बच्चों की प्रगति उसके अंक से नहीं देखी जाती। वहां बच्चे रोगी नहीं माने जाते कि उनका उपचार किया जाए।"

सुबह हुई। जिया को जगाना नहीं पड़ा। वह खुद उठ गई। लता चौंकी। जिया तैयार थी। जतिन ने पूछा, "स्कूल बस आने वाली है।"

जिया दौड़कर जतिन से लिपट गई। बोली, "पापा, कल से चली जाऊंगी। आज आप स्कूल के गेट तक छोड़ दो।"

लता ने सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "हम चलेंगे न। डोंट वरी।"

जतिन ने जिया का माथा चूम लिया। जिया स्कूल के लिए खुशी-खुशी तैयार हो गई। रास्ते भर दोनों जिया का मन बहलाते रहे। कुछ देर बाद लता ने कहा, "वो देखो! तुम्हारा स्कूल गेट।"

जिया ने कहा,"ओके। अब मैं चली जाऊंगी। स्कूल बस से घर लौट आऊंगी। बॉय।" जिया हाथ हिलाते हुए अपनी कक्षा की ओर जाने लगी। जतिन और लता उसे

अपने लेखक को जानिए

मनोहर चमोली 'मनु' : शिक्षक होने के साथ-साथ बाल साहित्य में सक्रिय। कई कहानियों का भारतीय सहित कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। कई पाठ्य पुस्तकों में कहानियां शामिल हैं। शिक्षा और साहित्य में आलोचना के लिए जाने जाते हैं। बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

देखते ही रह गए।

नया स्कूल। नई कक्षा। नए सहपाठी। सब कुछ नया था। जिया अपनी कक्षा में चली गई। सबसे पीछे की कुछ सीटें खाली थीं। जिया एक सीट में जाकर बैठ गई। उसने गौर किया। लगभग चालीस स्टूडेंट्स अपनी-अपनी सीट पर बैठे थे। तभी क्लास टीचर अंदर आईं। गुड मॉर्निंग की आवाज सुनकर वह बोलीं, "गुडमॉर्निंग ऑल। आज पहला दिन है। मैं कविता हूं। आपकी क्लास टीचर। मैं आपको हिंदी पढ़ाऊंगी। आप सभी के रिपोर्ट कॉर्ड मैंने देखें हैं। फिफ्थ क्लास में नमन के नाइंटी परसेंट मॉर्क्स आए हैं। नमन!"

अपना नाम सुन नमन खड़ा हो गया। कविता ने कहा, "ओके। सबसे कम नंबर वाला रिपोर्ट कार्ड जिया का है। जिया!" जिया भी खड़ी हो गई। सहपाठी नमन को तो कभी जिया को देख रहे थे।

कविता बोलीं, "ओके। नमन, सूरज कहां से उगता है?"

नमन तपाक से बोला,"पूरब से।"

कविता ने जिया की ओर इशारा किया। जिया धीरे से बोली, "मैम, सूरज तो अपनी जगह पर खड़ा है।"

कविता ने सिर हिलाते हुए कहा, "नमन। हम दिन और महीने तो जानते हैं। वैसे, एक साल में कितने संडे होते हैं?"

जवाब आया, "अड़तालीस।"

अब कविता ने जिया की तरफ देखा। जिया बोली, "बावन।"

कविता ने पूछा,"नमन। रोबोट के बारे में कुछ बताओ।"

उसने जवाब दिया,"रोबोट मशीन है। इंसान उसे कंट्रोल करता है।"

अब जिया की बारी थी। वह बोली, "रोबोट सपने नहीं देख सकता। वह उदास भी नहीं हो सकता। वह अपने आप खुद में सुधार भी नहीं कर सकता।"

कविता ने फिर पूछा, "एक खाली बर्तन में भी कुछ न कुछ होता है। क्या?"

नमन समझ न पाया। जिया को इशारा मिला, तो उसने जवाब दिया, "हवा और थोड़ी-सी रोशनी।"

कविता ने दोनों को बैठ जाने के लिए कहा। नमन झेंप रहा था। वहीं जिया आत्मविश्वास से भरी हुई थी। कविता ने कहा, "बच्चो, आप सब अब छठी कक्षा में हैं। वैसे, हम हर दिन सीखते हैं। परीक्षा में अच्छे अंक लाना एक कला है। सब इस कला में माहिर नहीं होते। लेकिन, कम अंक लाने वाले कम जानते हैं, ऐसा नहीं है। पूरे साल समझ के साथ ज्यादा से ज्यादा जानना बड़ी बात है। जानना और बेहतर जानना में भी अंतर होता है। खूब पढ़ो और खूब सोचो। खूब सवाल करो। खूब बातें करो।" यह कहकर कविता हाजिरी लेने लगीं।

जिया के बाईं ओर बैठी लड़की ने कहा, "मैं शगुन हूं। तुम तो बहुत इंटेलीजेंट हो। शायद, मैं तुम्हारे साथ बैठकर इंटेलीजेंट हो जाऊं।"

जिया का ध्यान हाजिरी पर बोले जा रहे नामों पर था। वह धीरे से बोली,"डोंट वरी। मेरी परी है न। वह सब कुछ ठीक कर देगी।"

शगुन ने फुसफुसाते हुए पूछा, "क्या? परी?"

जिया जैसे नींद से जागी हो। बोली, "मतलब। हम सबके भीतर एक परी होती है। वह चाहे, तो सब कुछ ठीक कर सकती है।"

तभी कविता ने पुकारा, "जिया।" जिया ने जवाब दिया,"यस मैम।" ✪

सच्ची परियां

अपने लेखक को जानिए

डॉ. संगीता बलवन्त : एल एल. बी, बी एड, पी एच.डी। सम्प्रति : विधायक, सदर गाजीपुर, बीजेपी
सम्मान : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा सूर सम्मान 2013
प्रकाशित पुस्तकें : 1. बचपन के वो दिन (बाल कथा संग्रह)
2. सजा (नारी हृदय को स्पर्श करती 25 कहानियां)

"शीनू, जल्दी-जल्दी से A B C D याद करो। आज भी तुम A से Z तक मम्मी को पूरा नहीं सुना पाई तो मम्मी बहुत गुस्सा होंगी।"

"किस पल ?"

"मुझ पर भी गुस्सा होंगी और तुम पर भी गुस्सा होंगी।"

"दोनों पल क्यों ?"

"मुझ पर इसलिए गुस्सा होंगी कि मैं तुम्हें A B C D याद नहीं करा पाया और तुम पर इसलिए गुस्सा होंगी कि तुम A B C D याद नहीं कर पाई। दिव्यांश अपनी चार साल की तोतली आवाज में बोलने वाली नन्ही बहन को समझाते हुए बोला।

"पहले तुम पली की कहानी सुनाओ, फिल मैं पढ़ूंगी।"

"कल ही तो मैंने परी की ही कहानी सुनाई थी। आज मैं तुम्हें परियों की एक राज की बात बताता हूं।"

कक्षा 4 में पढ़ने वाले शीनू के भाई को पता था कि नटखट शीनू बिना किस्सा-कहानी सुने पढ़ने वाली नहीं है।

"लाज की बात ?" शीनू उत्सुकता से पूछी।

"हां राज की बात! सुनो, परियों की जो कहानी सुनाई जाती है कि परियां आसमान में होती हैं। वह झूठ है। वास्तव में परियां धरती पर ही होती हैं।"

"धलती पल ?"

"हां, धरती पर।"

"मैं तो नहीं देखी ?"

"देखी हो, पर तुम्हें पता नहीं। किसी भी घर की बच्ची या मम्मी जो अच्छे काम करती हैं, जिनके विचार अच्छे होते हैं वे ही परी हैं।"

"सच्ची, फिल तो मैं भी पली हूं!"

"चार दिन से मम्मी तुमको A B C D याद करने के लिए बोली हैं, पर तुमने याद नहीं किया। मम्मी की बात तुम नहीं मानी हो। फिर तुम अच्छी बच्ची कैसे ? और अच्छी बच्ची

नहीं हो तो परी कैसे ?"

"अले, दो ही जगह तो भूली थी। इस बाल देखना, कहीं नई भूलूंगी!" शीनू को तो परी बनना ही था। चाहे जो हो जाए। इस बार A B C D में कहीं गलती नहीं करेगी वह।

ऐसा सोचकर परियों की तरह उसने अपनी आंखें बंद कीं और मन ही मन A B C D याद करने लगी। इसी बीच घर का काम-काज निपटाकर बच्चों के बीच उनकी मम्मी भी पहुंच चुकी थी।

कुछ देर बाद शीनू ने आंखे खोलीं और बिना रुके, बिना भूले A से Z तक सही-सही सुना दिया। दिव्यांश, और मम्मी शीनू की सफलता पर जोर-जोर से तालियां बजाने लगें।

"अब बोलो भइया, मैं पली हूं न ?"

"बेशक, तुम परी हो।" कहते हुए दिव्यांश मम्मी द्वारा लाए कचौड़ी में से एक छोटा टुकड़ा तोड़कर शीनू के मुंह में डाल दिया।

शीनू ने भी अपने भइया को कचौड़ी खिलाई।

"इतनी अच्छी कचौड़ी बनाने वाली हमाली मम्मी भी पली है न भइया!" शीनू मम्मी से लिपटते हुए अपने भइया की तरफ देखकर बोली।

"हां, हमारी मम्मी भी परी हैं।" शीनू की बात पर हामी भरते हुए दिव्यांश भी मम्मी से लिपट गया।

मम्मी अपने बच्चों को देर तक दुलारती रहीं। बच्चों को लगा, वह परी के सुनहरे आंचल में हैं। ✪

मक्खी

लेकर गेहूँ के दो दाने
मक्खी चक्की चली पिसाने,
चक्की वाला डांट भगाया
गेहूँ उसका नहीं पिसाया।

मक्खी बैठी आंखें मूँद
तभी कहीं से आया घुन
देख वहाँ गेहूं के दाने
धीरे-धीरे लगा चबाने।

खूब चबाया जी भर चाटा
दोनों दाने बन गए आटा
स्वाद नया आटे का चक्खी
कह के टाटा उड़ गयी मक्खी ।

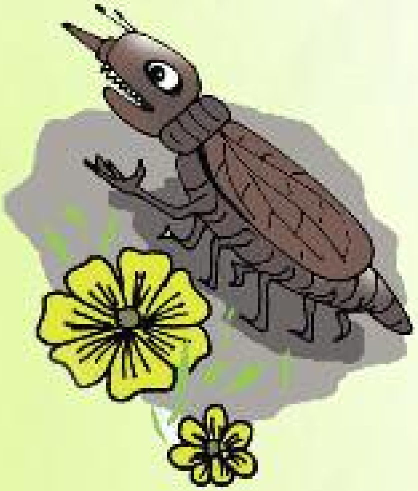

चित्र : सुशील दोषी

अपने लेखक को जानिए

श्रवण कुमार सेठ : बाल कविताएं, कहानियां, लघुकथाएं इत्यादि विधाओं में लेखन। हाल में बाल कविताओं की पहली पुस्तक 'आसमान में उड़ना है' प्रकाशित हुई। सम्प्रति : समीक्षा अधिकारी, उत्तर प्रदेश

उत्तर : पहेली 1-(बाएं से दाएं) कनक, हमला, रकम। (ऊपर से नीचे) कहर, नमक, कलाम, पहेली 2. 1-ग, 2-ख, 3-क, पहेली 3. 4 2 5 3 8 6

अंगूरों का शहर

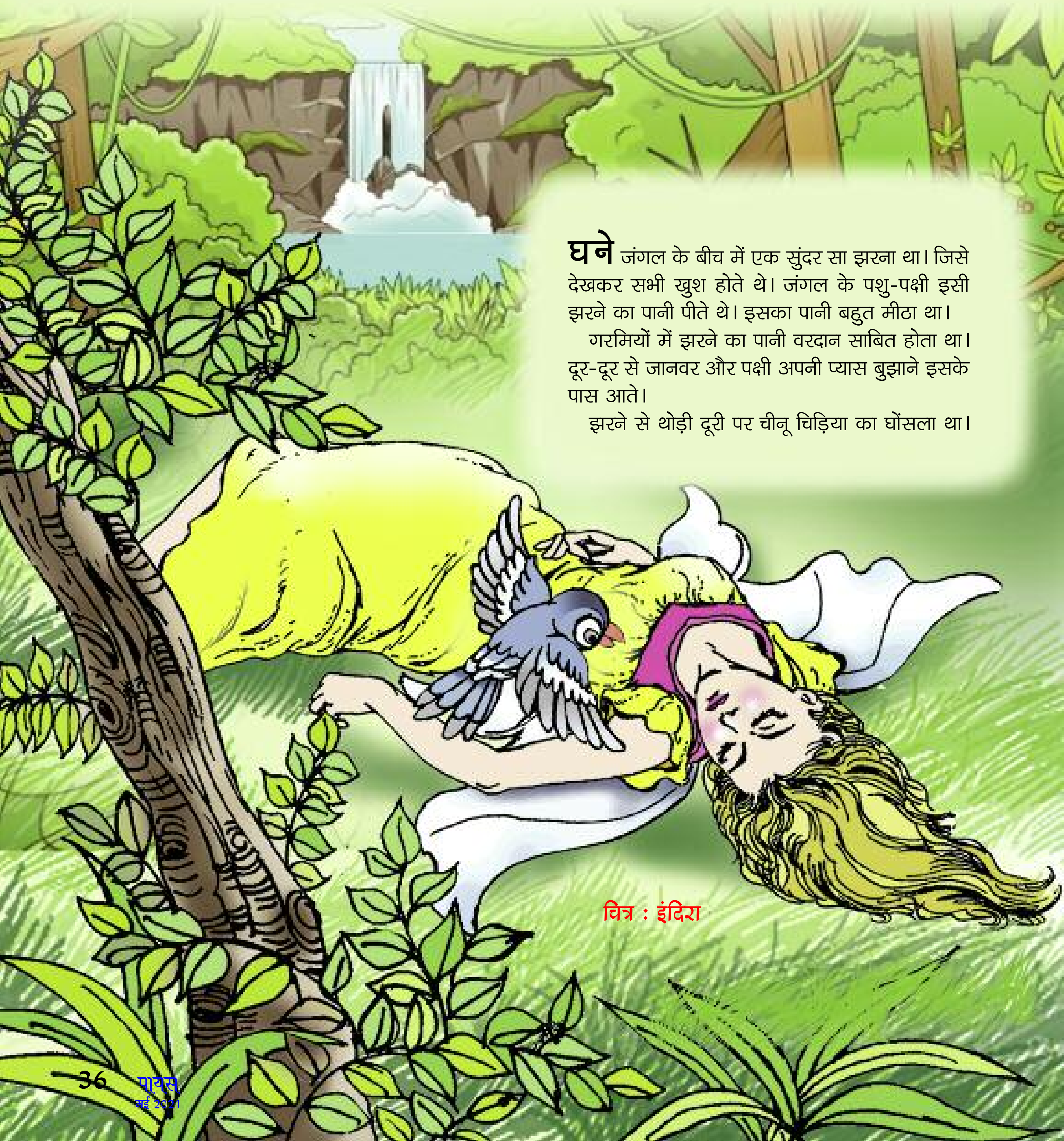

घने जंगल के बीच में एक सुंदर सा झरना था। जिसे देखकर सभी खुश होते थे। जंगल के पशु-पक्षी इसी झरने का पानी पीते थे। इसका पानी बहुत मीठा था।

गरमियों में झरने का पानी वरदान साबित होता था। दूर-दूर से जानवर और पक्षी अपनी प्यास बुझाने इसके पास आते।

झरने से थोड़ी दूरी पर चीनू चिड़िया का घोंसला था।

चित्र : इंदिरा

उसके घोंसले के आसपास बहुत सारी चिड़ियों का घोंसला था। चीनू बड़ी दयालु स्वभाव की थी।

गरमी के दिन थे। चीनू अपने घोंसले में बैठी थी। अचानक उसे किसी के कराहने की आवाज सुनाई दी। यह आवाज किसी लड़की की थी। चीनू घोंसले से बाहर निकली। उसने आसपास देखा, लेकिन कोई नजर नहीं आया। वह फिर घोंसले में लौट आई। उसे घोंसले में लौटे अभी कुछ समय ही हुआ था कि उसे फिर वो आवाज सुनाई दी। अब आसपास के बहुत सारे पक्षी अपने घोंसले से बाहर निकल आए।

चीनू फिर से घोंसले से बाहर निकली। वह उड़कर घोंसले से कुछ दूर पहुंची। उसने जो देखा, उसे देखकर उसकी आंखें खुली की खुली रह गईं। झरने से कुछ दूरी पर सुंदर कपड़ों में एक लड़की जमीन पर लेटी हुई थी। कराहने की आवाज उसी की थी। चीनू उस लड़की के पास जाना चाहती थी।

"तुम्हें उसके पास नहीं जाना चाहिए। तुम्हें क्या, किसी भी पक्षी को उसके पास नहीं जाना चाहिए। उससे हम सबको खतरा हो सकता है।" बीकू बाज ने कहा। उसने चीनू को उस लड़की के पास आते हुए देख लिया था।

देखते ही देखते बहुत सारे पशु और पक्षी वहां आ गए। सभी उस लड़की के पास जाने से डर रहे थे। लड़की के कराहने की आवाज बढ़ रही थी। वह बहुत ज्यादा परेशान लग रही थी।

"हमें उसकी मदद जरूर करनी चाहिए। उससे पूछना तो चाहिए कि वह किस परेशानी में है। अभी वह इस जंगल की मेहमान भी है। मैं तो पूछकर रहूंगी।" चीनू ने कहा।

"पागलपन मत करो। तुम पूरे जंगल को संकट में डाल दोगी। क्या जरूरत है उसके पास जाने की?" बीकू के साथ-साथ अन्य पक्षी भी कहने लगे।

"नहीं, तुम सब जो भी समझो। मैं किसी को ऐसे तड़पते हुए नहीं देख सकती।" चीनू ने उड़ते हुए कहा।

चीनू उड़कर उस लड़की के पास पहुंच गई। उसने चीं-चीं के आवाज में उस लड़की से पूछते हुए कहा, "क्या बात है। तुम कौन हो? यहां ऐसे लेटकर क्यों कराह रही हो?"

"मेरा नाम सोना परी है। मैं परिस्तान से आई हूं। मैं जंगल में घूम रही थी। भयंकर गरमी के कारण यहां निढाल होकर गिर गई हूं। मुझे बहुत ज्यादा प्यास लगी है। मुझमें अब इतनी भी हिम्मत नहीं बची कि मैं उस झरने तक जा सकूं। क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो? मुझे पानी पिला दो।" सोना ने धीमी आवाज में कहा।

"हां, हां। क्यों नहीं। मैं अभी पानी लेकर आती हूं।" चीनू ने कहा।

चीनू उड़कर झरने के पास गई। वह अपने चोंच में पानी भरकर लाई। उसने सोना को पानी पिलाया। इस तरह वह कई बार पानी लेकर आई। वह तब तक सोना को पानी पिलाती रही, जब तक उसकी प्यास नहीं बुझी।

"अब मैं ठीक हूं। मेरी प्यास बुझ गई है। तुम बहुत दयालु हो। इस जंगल में केवल तुम्हीं ने मेरी मदद की।" सोना ने कहा।

"मुझे खुशी है कि तुम अब ठीक हो। चलो, मैं तुम्हें अपना जंगल दिखाती हूं।" चीनू ने कहा।

"मैं अब यह जंगल नहीं घूमना चाहती। यहां तुम्हारे अलावा कोई भी दयालु नहीं है। चलो, मैं तुम्हें अपने परिस्तान ले चलती हूं। वहां परियों की दुनिया में तुम्हें बहुत मजा आएगा। वहां लाल अंगूर का एक शहर है। वहां चारों ओर अंगूर ही अंगूर हैं। तुम भरपेट अंगूर खा लेना।" सोना बोली।

"ऐसा नहीं है। मेरे जंगल के अन्य पशु पक्षी भी अच्छे हैं। वे सब तुमसे डर रहे थे। इसलिए तुम्हारी मदद नहीं कर पाए। मैं अकेले तुम्हारे परिस्तान नहीं जा सकती। तुम्हें मेरे अन्य साथियों को भी परिस्तान और अंगूर के शहर ले चलना होगा।" चीनू ने कहा।

"सचमुच बहुत दयालु हो। तुम्हारा हृदय बहुत विशाल है। चलो, मैं तुम सबको अंगूरों के शहर ले चलती हूं।" सोना ने कहा।

चीनू ने सोना को सभी पशुओं और पक्षियों से मिलाया। उन्हें अंगूरों के शहर और परिस्तान की बात भी बताई।

बीकू के साथ-साथ अन्य पक्षी भी अब परी से आंखें मिलाते हुए शर्म महसूस कर रहे थे। सबने मिलकर सोना से माफी मांगी।

अब सब सोना के दोस्त बन चुके थे। सोना सभी को लेकर लाल अंगूरों के शहर में ले गई। सबने जमकर अंगूर खाए। ✪

अपने लेखक को जानिए

ललित शौर्य : जी.बी.टी.यू लखनऊ से बी.टेक। चंपक, नंदन, बाल भारती, आदि राष्ट्रीय बाल पत्रिकाओं में बाल कहानियां प्रकाशित। सृजन सुगन्धि (कविता संग्रह), दादाजी की चौपाल (बाल कहानी संग्रह), कोरोना वॉरियर्स (बाल कहानी संग्रह), द मैजिकल ग्लब्ज (बाल कहानी संग्रह), जादुई दस्ताने (बाल कहानी संग्रह) प्रकाशित।

गोलू और परी

नटखट गोलू कोरोना संकट के समय भी लापरवाही करने से बाज नहीं आ रहा था। सब उसे समझाकर थक गए पर उसपर कोई असर नहीं होता।

एक रात गोलू सो रहा था। उसने एक सपना देखा। सपने में उसके पास लवी नाम की एक परी ने आकर पूछा, "कैसे हो, गोलू?"

"ठीक हूं, लेकिन मैंने आपको पहचाना नहीं। आप कौन हैं?" गोलू ने जानने की उत्सुकता दिखाई।

"मैं हूं तुम्हारी दीदी शेफाली की दोस्त। उसके पास मैं अक्सर आती हूं। हम दोनों के बीच खूब बातें होती हैं। वह मुझे तुम्हारे बारे में भी बताती रहती है। उसने तुम्हें भी मेरे बारे में बताया होगा। है न?"

"मैं तो शेफाली दीदी की सभी सहेलियों को जानता हूं, लेकिन आपको पहली बार देख रहा हूं। आप दीदी की दोस्त नहीं हो सकतीं।"

यह सुनकर लवी परी जोर से हंसी और उसने चेहरे से मास्क हटाकर कहा, "मैं हूं लवी परी।"

"अच्छा! तो आप ही हैं लवी परी? दीदी आपकी खूब चर्चा करती हैं। आपने ये मास्क क्यों लगा रखा था? क्या परीलोक में भी कोरोना फैला

चित्र : इंदिरा

हुआ है ?" गोलू ने पूछा।

"नहीं, मेरे प्यारे भाई। परीलोक में कोरोना नहीं है, लेकिन धरती पर वह बुरी तरह फैला हुआ है, इसलिए मास्क लगाकर आना पड़ा। यह देखो, हाथ साफ रखने के लिए मेरे पास सैनिटाइजर भी है। मैं भीड़भाड़ से बचती हुई आई हूं। तुमसे मिलना जरूरी था, इसलिए कोरोना काल में आना पड़ा, वरना बाद में आती आराम से।" परी बोली।

"ऐसा कौन-सा जरूरी काम था, जिससे तुम मुझसे मिलने आई, परी दीदी? अगर तुम्हें कोरोना हो गया, तो वह पूरे परीलोक में फैल जाएगा। तुम्हारी भी जान संकट में पड़ जाएगी। मेरी दीदी दुखी हो जाएंगी।" गोलू चिंतित स्वर में बोला।

"गोलू, तुम बहुत अच्छे हो। तुम्हें मेरी कितनी चिंता है। लेकिन यह बताओ कि तुम अपने प्रति क्यों लापरवाह हो? अगर मुझसे दोस्ती करनी है, तो शरारतें छोड़नी होंगी। मंजूर है कि नहीं?"

"मंजूर है, परी दीदी। आप बहुत अच्छी हैं। आप खतरे की परवाह न करते हुए मुझसे मिलने आई हैं।"

"हां, मेरे भाई। मुझे तुम्हारी बड़ी चिंता थी। मुझे वचन दो कि अपनी शेफाली दीदी की तरह मन लगाकर ऑनलाइन पढ़ाई-लिखाई करोगे। बाहर जाओगे, तो मास्क लगाओगे। भीड़ से दूर रहोगे। ठीक से हाथ धोओगे।"

"ठीक है, परी दीदी। अब मैं आपको शिकायत का कोई मौका नहीं दूंगा। आप मुझसे मिलने आती रहना। शेफाली दीदी और मेरे साथ आप खेलना। मेरे बगीचे के आम-जामुन चखना।"

"ठीक है, मेरे प्यारे भाई। मुझे तुमसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। तुम बहुत जल्दी मेरा कहना मान गए। अब अपनी दीदी, मम्मी और पापा की भी बातें मानना। मैं सब देखती रहूंगी और शरारत करोगे,तो आकर कान उमेठूंगी।" यह कहकर परी ने प्यार से गोलू का गाल थपथपाया।

गोलू खुशी से चहक उठा।

"अब चलूं, मेरे भाई। मेरी कुछ सखियां इंतजार कर रही होंगी। उनसे महामारियों पर चर्चा करनी है।" लवी परी ने कहा।

"मुझे भी महामारियों पर बताती जाओ। इसके पहले कौन-कौन-सी महामारियां आ चुकी हैं धरती पर?" गोलू ने पूछा।

"चलो, संक्षेप में तुम्हें बता देती हूं। सुनो, पिछली चार सदियों से हर सौ साल में अलग-अलग महामारियां पूरी दुनिया में आईं। सन 1720 में प्लेग पूरी दुनिया में फैला था। सौ साल बाद 1820 में एशियाई देशों में हैजा ने हमला किया और उससे खूब मौतें हुईं। 1920 में स्पेनिश फ्लू ने धरती पर तबाही मचाई। 2020 में कोरोना आ धमका।" परी ने बताया।

"हां, दीदी। बड़ी अच्छी जानकारी दी। सुबह मैं शेफाली दीदी को सारी बातें बताऊंगा। वे बेहद खुश होंगी।" गोलू बोला।

"हां। तो अब चलूं?" परी ने मुस्कराकर कहा।

गोलू बोला, "जाओ, परी दीदी, लेकिन कोरोना खत्म हो जाए, तो जरूर आना। दुआ करना कि कोरोना खत्म हो जाए और पूरी दुनिया सुखी हो जाए।"

"जरूर, गोलू। लोग सावधानी बरतेंगे, टीका लगवाएंगे तो कोरोना को भागना ही पड़ेगा सिर पर पैर रखकर।" यह कहकर परी खिलखिलाई और फिर अदृश्य हो गई।

गोलू की नींद खुल गई। सुबह उसने सारा हाल घरवालों को सुनाया और कहा, "अब मैं कोई शरारत नहीं करूंगा। परी दीदी से मिलकर बहुत अच्छा लगा।"

गोलू वाकई सुधर गया। यह देखकर परी के साथ ही गोलू के घरवाले भी खुश हो गए। ✪

अपने लेखक को जानिए

राजकुमार धर द्विवेदी :
पत्रकारिता और स्वतंत्र लेखन। बचपन से लेखन, खासकर बाल-साहित्य में गहरी रुचि। अब तक नंदन, चंपक, पराग, बालहंस, लोटपोट समेत देश की प्रतिष्ठित बाल-पत्रिकाओं में अनेक कहानियां प्रकाशित।

प्रसिद्ध संग्रहालय

बच्चो, आज हम आपको परियों की दुनिया यानी फेयरी म्यूजियम के बारे में बताने जा रहे हैं। जिन को देखने के बाद आपको कहीं ना कहीं उनका अस्तित्व भी महसूस होगा। दरअसल परियों के अस्तित्व से जुड़ी चीज तो इस दुनिया में उपलब्ध नहीं हैं। पर ऐसी कई चीजें इन म्यूजियम्स में हैं जो परी कथा सी तुम्हें लगेंगी।

स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूट, वॉशिंगटन

स्मिथसोनियन दुनिया का सबसे बड़ा रिसर्च और म्यूजियम कांप्लेक्स है। इसमें 19 म्यूजियम और गैलरी हैं। इसमें जूलॉजिकल पार्क के साथ साथ बहुत से रिसर्च स्टेशन भी हैं। 137 मिलियन से अधिक वस्तुएं जो अमेरिका की कहानी और अतीत का विवरण करती हैं, इसमें रखी हुई हैं।

मुख्य आकर्षण : डोरोथी रूबी रेड स्लिपर्स, फर्स्ट लेडी की ड्रेस, सेंट लुइस की स्पिरिट, अपोलो 11 कमांड मॉड्यूल आदि।

ले लुवेर, पेरिस

म्यूजियम बनने से पहले यह फ्रांस के राजा का एक महल हुआ करता था। 1989 में आई एम पी पिरामिड म्यूजियम का मुख्य आकर्षण बन गई थी। इस म्यूजियम का कलेक्शन जिसमें एंटीक पीस से लेकर 19वीं सदी की शुरुआत की कुछ चीजें हैं। अगर आप यहां घूमना चाहते हैं, तो सूली विंग से शुरू करें। यह इस म्यूजियम का हृदय माना जाता है और यह आपको इजिप्शियन कमरों में लेकर जाता है।

मुख्य आकर्षण : वीनस डी मिलो, मोना लिसा, सोमाथ्रेस को विजय, लियोनार्डो दा विंची।

एक्रोपोलिस म्यूजियम, एथेंस, ग्रीस

इस म्यूजियम में मन बहलाने वाले ग्लास का फ्लोर आपको एक बहुत अच्छा अनुभव प्रदान करने वाला है और यह आपको आर्किलॉजिकल व्यू देगा। अगर आप ऊपर की तरफ जाते हैं, तो आपको इतिहास की सदियों पुरानी एक्रोपोलिस नजर आएंगी। आपको इस म्यूजियम में थोड़ी थोड़ी एथेनियन की झलक भी दिखाई देंगी।

मुख्य आकर्षण : परथेनों का फ्रिज आपको चमत्कृत कर देगा। ग्लास फ्लोर का अनुभन अनोखा होता है।

स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूट

स्टेट हर्मिटेज, सेंट पीटर्सबर्ग, रूस

इस म्यूजियम में भी आपको तीन मिलियन से अधिक चीजें मिलेंगी जोकि एक बढ़िया साहित्य का संग्रह है। इसमें स्टोन एज से लेकर 20वीं सदी तक की वस्तुएं देखने को मिलेंगी। नेवा नदी के पास इस म्यूजियम की 6 बिल्डिंग्स हैं। इसका ढांचा विंटर पैलेस के समान है। यह सफेद और नीले रंग की बिल्डिंग 1764 में पूर्ण हो गई थी। कैथरिन द ग्रेट ने इसी साल इस म्यूजियम की खोज की और उसने इसी साल बर्लिन से 255 पेंटिंग खरीदी थी। यह म्यूजियम हमें वेस्टर्न यूरोपियन आर्ट के दर्शन करवाता है। इसमें 120 कमरे हैं, जो 4 बिल्डिंग में हैं।

मुख्य आकर्षण : ट्रेजर गैलरी, गोल्ड रूम शोकेस, ब्लैक सी, ओरिएंट आदि।

ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन, इंग्लैंड

यह इंग्लैंड का सबसे बड़ा म्यूजियम है और इसमें मानव विज्ञान और आर्कियोलॉजी का एक अच्छा संग्रह है। इसमें लगभग 8 मिलियन वस्तुएं हैं जो इतिहास का अच्छा दर्शन करवाती हैं।

मुख्य आकर्षण : इजिप्शियन गैलरी, इजिप्शियन एंटीक का सबसे अच्छा कलेक्शन आदि।

प्रेडो, मैड्रिड, स्पेन

इस म्यूजियम के कुछ मास्टर पीसों का श्रेय स्पेनिश रॉयल फैमिली को जाता है। सदियों से यहां के राजा और रानियों ने वस्तुओं का एक अच्छा संग्रहण किया है। इसमें बहुत सी स्पेनिश और इटालियन पेंटिंग हैं। फर्नांडो 7 ने इस संग्रह को 1819 में लोगों के लिए खोला।

मुख्य आकर्षण : रूबेंस के द्वारा तीन ग्रेस।

मेट्रोपोलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट, न्यू यॉर्क

पश्चिमी देशों का यह सबसे बड़ा मेट्रोपोलिटन म्यूजियम है। इसके अंदर 2 मिलियन चीजों का संग्रह है। यहां दुनिया की लगभग सभी अनोखी चीजों का कलेक्शन है। इसकी यूरोपियन पेंटिंग बहुत ही खूबसूरत हैं। इसके इजिप्ट के संग्रह में पर्ने का किला और देनदुर का मंदिर आदि शामिल है। अमेरिकन विंग में अमेरिकी इतिहास की चीजें शामिल हैं।

मुख्य आकर्षण : आदम और ईव जो कि इस पूरे म्यूजियम का मुख्य केंद्र है, यह आपको अपनी ओर बड़ी खूबसूरती से आकर्षित करने वाला है। अगर आप यहां जाते हैं तो इसे अवश्य देखें।

परी महल, जम्मू, भारत

परी महल जम्मू और कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में डल झील के पास स्थित है। यह महल चश्म-ए-शाही बाग के ऊपरी हिस्से में स्थित है, जिसे 17वीं सदी में बनवाया गया था। इस महल का निर्माण मुगल बादशाह शाहजहां के सबसे बड़े पुत्र दारा शिकोह ने करवाया था।

परी महल को 'परियों का धाम', 'परी महल बाग' और 'फेयरी पैलेस' के नाम से भी जाना जाता है।

मुख्य आकर्षण : इस बाग की कुल लंबाई और चौड़ाई क्रमशः 122 मीटर और 62.5 मीटर है। बाग में 6 छत हैं। छः छज्जों वाला यह बगीचा लाजवाब है।परी महल आज के समय में भी जम्मू-कश्मीर राज्य का गौरव है।

मोनिका अग्रवाल

ले लुव्रे, पेरिस, फ्रांस

एक्रोपोलिस म्यूजियम, एथेंस

स्टेट हर्मिटेज, सेंट पीटर्सबर्ग

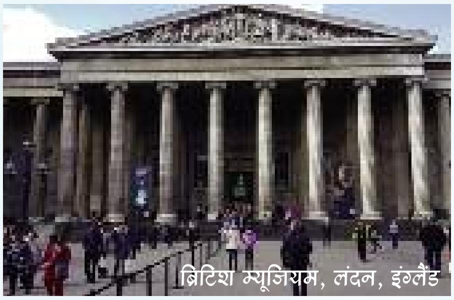
ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन, इंग्लैंड

प्रेडो, मैड्रिड, स्पेन

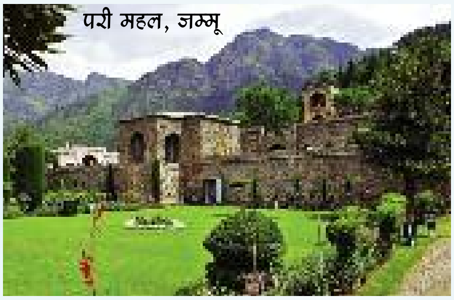
परी महल, जम्मू

चित्र : सुशील दोषी

सोनपरी

पीहू के घर के साथ लगता पार्क था। पार्क में हरे-भरे छोटे-बड़े पेड़ थे। वहां क्यारियों में रंग-बिरंगे फूल खिले थे। इस पार्क में हर समय रौनक रहती थी। सुबह के समय पार्क की पगडंडी पर सैर करने वालों की, दोपहर को माली काका पार्क में कुछ न कुछ करते रहते थे। शाम के समय तो पार्क में मेला सा लग जाता था। एक तरफ बच्चे खेल रहे होते, तो दूसरी तरफ बुजुर्ग औरतें अपनी टोली में बैठी जमकर बातें करती। वे भजन-कीर्तन भी करती थीं। पार्क के एक कोने में बुजुर्ग लोग प्राणायाम, योग करते नजर आते थे।

पीहू भी शाम के समय बच्चों के साथ पार्क में खेलती थी। उसका मन खेल में खूब रमता था। बस पढ़ाई में ही उसका मन न लगता था। इस बात को लेकर उसे मम्मी-पापा से खूब डांट पड़ती थी। छुट्टी वाले एक दिन पीहू की मम्मी सुबह से ही पीहू के पीछे पड़ी थी।

"बेटा, तुम्हारे इम्तिहान सिर पर आ गए हैं। चलो पढ़ने बैठ जाओ।"

पीहू किताब हाथ में पकड़कर इधर-उधर घूमकर समय व्यर्थ गंवाने लगी। दोपहर तक उसने एक भी पाठ याद नहीं किया था। उसकी मम्मी को गुस्सा आया। उन्होंने उसे हलकी सी चपत लगाते हुए डांट दिया। पीहू नाराज होकर घर से बाहर निकल पड़ी।

उसने सोचा अब क्या करूं? वह सीधी पार्क में चली गई। इस समय पार्क में कोई भी नहीं था। माली काका भी आज नहीं आए थे। उसे मन ही मन डर भी लग रहा था। अचानक शहतूत के पेड़ के नीचे उसे बहुत सारे शहतूत पड़े नजर आए। वह शहतूत बीनकर इकट्ठा करने लगी। उसने सोचा, 'इन्हें धोकर शाम को अपने दोस्तों को खिलाऊंगी।'

पीहू शहतूत इकट्ठा करने में जुटी थी। सहसा उसे पेड़ के पीछे से कुछ आवाज सुनाई पड़ी। एक बार तो वह बुरी तरह डर गई। कुछ देर बाद हिम्मत जुटाकर वह उत्सुकतावश पेड़ के पीछे की ओर चली गई। वहां अपनी जितनी एक सुंदर छोटी परी को छुपा हुआ देखकर वह चकित रह गई। परी घबराई हुई थी।

"अरे, तुम तो परी हो। फिर तुम डर क्यों रही हो?"

"मैं अपनी मम्मी और साथियों से बिछुड़ गई हूं, मुझे यहां बहुत डर लग रहा है। क्या तुम मुझे अपने घर

ले चलोगी?"

"हां-हां, क्यों नहीं?"

"पर तुम्हें मुझे सबसे छुपाकर रखना होगा, अपनी मम्मी से भी।"

"ठीक है परी! मैं तुम्हें सोनपरी कहूं? तुम कितनी सुंदर हो।"

परी के हां कहते ही दोनों खिलखिलाकर हंस दी। फिर पीहू ने कुछ सोचते हुए कहा, "पर तुम्हें भी मेरा एक काम करना पड़ेगा?"

"वह क्या?"

"मुझे पता है कि तुम्हारे पास जादू है, तुम्हें मेरा पिछला सारा होमवर्क पूरा करना होगा। इसके लिए मुझे हर वक्त मम्मी तथा टीचर मैम से डांट पड़ती है।"

"ठीक है।"

पीहू सबसे आंख बचाकर सोनपरी को अपने कमरे में ले आई।

"मेरा तो यहां दम घुट रहा है। तुम कितनी अस्त-व्यस्त रहती हो। यहां मेज पर स्कूल बैग का सारा सामान बिखरा है। तुम्हारे कपड़े, जूते, मोजे, बाप रे बाप! कितना गंदा है तुम्हारा रूम। मैं यहां नहीं रह सकती।"

"मेरी मम्मी भी यही कहती हैं। मैं क्या करूं, मुझे बहुत आलस आता है। ये सब काम करने अच्छे नहीं लगते।"

"तो ठीक है, तुम मुझे वहीं पार्क में वापस छोड़ आओ!"

"नहीं, नहीं सोनपरी, मैं अभी अपनी सब चीजें समेट देती हूं।"

"चलो मैं भी तुम्हारी सहायता करती हूं।"

कुछ देर बाद कमरे का रूप ही बदल गया।

"अरे वाह! मेरा कमरा तो अच्छा लगने लगा।"

पीहू को परी बहुत प्यारी लगी।

तभी मम्मी की आवाज पीहू के कान में पड़ी, "कहां हो तुम पीहू, अभी तक नाराज हो मुझसे, सॉरी बेटा! चलो भोजन कर लो।"

पीहू कमरे को अच्छी तरह बंद कर, तुरंत मम्मी की तरफ दौड़ी आई, "मम्मी, मुझे बहुत जोर से भूख लगी है, मेरी थाली लगा दो, मैं अपने कमरे में ही बैठकर खाऊंगी।"

वह जल्दी से थाली लेकर कमरे में आई, "लो सोनपरी, तुम्हें भूख लगी होगी। तुम भी खाना खाओ।"

"तुम कितनी अच्छी हो पीहू।"

"सच! पर मम्मी तो मुझे अच्छा नहीं कहती। हर समय डांटती रहती हैं।"

कुछ देर बाद सोनपरी बोली, "मुझे अपने घर की याद आ रही है। मेरी मम्मी मुझे ढूंढ़ रही होगी। मुझे अपना होमवर्क भी करना था। पीहू, तुम पढ़ाई नहीं करती हो क्या?"

"मुझे पढ़ना अच्छा नहीं लगता।"

"पर तुम्हारा तो काम ही खेलना और पढ़ना है। चलो वादे के अनुसार पिछला होमवर्क करने में मैं तुम्हारी मदद करती हूं।"

पीहू अपना सारा होमवर्क करके परी के साथ खुशी-खुशी सो गई।

सुबह उसे कमरे में देखकर मम्मी ने पूछा, "पीहू, तुम्हें खेलने नहीं जाना क्या आज?"

पीहू परी को छोड़कर नहीं जा सकती थी। वह तुरंत बोली, "मम्मा! मुझे होमवर्क पूरा करना है।" पीहू के मुंह से पढ़ाई की बात सुनकर उसकी मम्मी चकित रह गईं।

शाम को पीहू अपने पीने के लिए दूध भी कमरे में ले आई। दोनों ने मिलकर दूध पिया। रात का भोजन भी पीहू कमरे में ले आई।

"सोनपरी तुम कितनी अच्छी हो, तुम हमेशा यहीं मेरे पास रहो न, तुम मेरी सबसे अच्छी और प्यारी दोस्त हो।"

अपने लेखक को जानिए

डॉ. शील कौशिक : एमएससी, एलएलबी, एम.एच.एम (होम्योपैथी)। प्रकाशित पुस्तकें : 30 (मौलिक : 21, सम्पादित : 5, अनुवादित : 3, लेखिका पर पुस्तक- 1)। कुछ के नाम : बचपन के आईने से, धूप का जादू, करें तो क्या करें, माशी की जीत, बालकविता-संग्रह : बिल्लो रानी।

रात के समय सोनपरी को अपनी मम्मी की आवाज सुनाई पड़ी।

"पीहू अब मुझे जाना होगा, लगता है मेरी मां मुझे ढूंढ़ते हुए पार्क में आ गई हैं।"

सोनपरी के जाने के नाम से पीहू उदास हो गई।

"जब भी तुम मुझे मन से पुकारोगी, मैं फिर हाज़िर हो जाऊंगी। अब मुसकरा दो पीहू।" सोनपरी प्यार से बोली।

पीहू ने चुपचाप दरवाजा खोला। वह सोनपरी को पार्क में छोड़ आई। वहां सचमुच उसकी मां थी। वह पीहू का आभार प्रकट करके सोनपरी को अपने साथ ले गई।

अगले दिन पीहू ने सुबह समय पर अपने आप उठकर अपना स्कूल बैग तैयार किया। स्वयं नहा-धोकर तैयार हो नाश्ते की मेज पर आकर बैठ गई।

उसकी मम्मी उसमें आए बदलाव को देखकर आश्चर्य से भर गई। वह पीहू की ओर प्यार से देखकर बोलीं, "पीहू! मेरी प्यारी बच्ची!"

पीहू अब सचमुच बदल गई थी।

परी की तलाश

"राजू बेटे, तुम क्या बाजार से मेरी दवाई ला दोगे?" पड़ोसी रामदयाल जी ने राजू को आवाज दी, तो उसने पलटकर मुंह बनाते हुए जवाब दिया, "मैं अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने जा रहा हूं, अभी मुझे फुर्सत नहीं है।" बेचारे रामदयाल जी मुंह मसोस कर रह गए।

"राजू बेटा, जरा एक गिलास पानी तो पिला दो, बड़े जोर की प्यास लगी है।" उस दिन बूढ़ी दादी ने अपने पोते राजू को आवाज लगाई, तो वह झुंझला उठा, "आपको भी बस हमेशा पानी की पड़ी रहती है। देख नहीं रहे कि मैं पढ़ाई कर रहा हूं।"

राजू का जवाब सुनकर दादी बड़ी मुश्किल से खाट पर से उठीं और धीरे-धीरे चलते हुए एक गिलास पानी पीकर लौट आईं।

घर हो या स्कूल, राजू कभी किसी का काम करने को तैयार ही नहीं होता था। उसकी इस आदत की वजह से मम्मी पापा भी खासे परेशान थे। वे उसे अक्सर समझाते, "बेटा, हमें हर किसी की मदद करने की कोशिश करनी चाहिए। दूसरों की मदद करने वालों का हमेशा भला ही होता है।" पर उनकी बातों का राजू पर कोई असर ही नहीं होता था।

फिर एक दिन अचानक न जाने क्या हुआ कि राजू की तबीयत खराब हो गई, उसे बड़े जोरों का बुखार चढ़ आया। बुखार की वजह से वह कई दिनों तक स्कूल भी नहीं जा पाया। स्वस्थ होने के बाद जब वह स्कूल पहुंचा, तो वह पढ़ाई में काफी पिछड़ चुका था। उसने अपने दोस्तों से नोट्स मांगे, तो उन्होंने बहाना बनाकर मना कर दिया। राजू को बुरा तो बहुत लगा पर वह कर क्या सकता था? परीक्षाएं सिर पर थी और राजू का कोर्स पूरा नहीं हुआ था। ऐसे में उसे फेल होने की चिंता सताने लगी, 'अब मैं क्या करूं? काश, कोई मेरी मदद करता।' उसे

चित्र : सुशील दोषी

पछतावा हो रहा था ।

ऐसे में उसे कहानी की एक किताब पड़ी नजर आई। उस किताब में परियों की बहुत सारी कथाएं थी। वे परियां हमेशा दूसरों की मदद करके खुश होती थी।

'हे परी रानी, क्या तुम कोर्स पूरा करने में मेरी मदद कर सकती हो? अगर तुमने मेरी मदद नहीं की, तो मैं परीक्षा में फेल हो जाऊंगा और फिर सब लोग मेरा मजाक उड़ाएंगे।' सोचते-सोचते राजू की आंखों में आंसू आ गए ।

"बचाओ-बचाओ, कोई मुझे इन कंटीली झाड़ियों से बाहर निकालो, यहां मेरा दम घुट रहा है।" अचानक एक महीन सी आवाज राजू के कानों में पड़ी।

राजू उस समय पार्क में बच्चों के साथ क्रिकेट खेल रहा था। उसके दोस्त मयंक ने बैट से छक्का मारा तो बॉल काफी दूर जाकर गिरी थी, जिसे लेने राजू वहां आया था।

"ओफो, अजीब मुसीबत है। जिसे देखो, वही मुझे मदद के लिए आवाज लगाता मिलता है।" राजू के मुंह से निकला।

तभी उसकी नजर झाड़ियों में गई। उसने देखा, वहां एक रंगीन चिड़िया बुरी तरह से घायल हालत में मदद के लिए पुकार रही थी ।

उसकी हालत देखकर राजू बॉल ढूंढ़ने का काम छोड़कर उसकी मदद करने को आगे बढ़ा।

राजू ने कांटों की परवाह किए बगैर उस चिड़िया को धीरे-धीरे कोशिश करके झाड़ियों से बाहर निकाला और फिर उसे अपनी पानी की बोतल से थोड़ा सा पानी भी पिलाया ।

पानी मिला, तो चिड़िया की जान में जान आई। उसने कृतज्ञता भरी नजरों से राजू की तरफ देखा, जैसे राजू को धन्यवाद दे रही हो ।

"मेरी मदद करने का शुक्रिया दोस्त, आज अगर तुम मुझे झाड़ियों से ना निकालते, तो शायद मेरी जान ही चली जाती।"

चिड़िया को मनुष्यों की तरह बोलते देखकर राजू चौंका, "अरे, तुम तो हमारी भाषा में भी बोलना जानती हो, कैसी चिड़िया हो तुम?" राजू ने आश्चर्य से पूछा, तो चिड़िया ने अपना रूप बदला और एक परी में बदल गई। सुनहरे पंखों वाली सुंदर परी को देखकर राजू चकित रह गया।

"राजू, मैं कोई चिड़िया नहीं, बल्कि एक परी हूं। मेरा नाम सुनहरी है। तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए ही मैंने चिड़िया बनकर तुम्हें मदद के लिए पुकारा था। तुमने अपने खेल की चिंता किए बिना मुझे झाड़ियों से बाहर निकालकर मेरी जो मदद की है। बोलो तुम्हें क्या चाहिए?"

परी की बात सुनकर राजू की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे

अपने लेखक को जानिए

इंद्रजीत कौशिक : पिछले 40 वर्षों से बाल साहित्य के क्षेत्र में रचना कर्म। अब तक केवल एक ही पुस्तक प्रकाशित हुई मूछों वाले मामा जी के नाम से जिस पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा बाल साहित्य का शंभू दयाल सक्सेना पुरस्कार मिला। देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन।

संप्रति : भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत

ऐसी ही तो मदद करने वाली परी की तलाश थी, जो पूरी हुई। तभी उसे नोट्स का ख्याल आया, तो उसने परी रानी से कहा, "मेरे अधूरे नोट्स दिला दो।"

"हम परियां हमेशा ऐसे बच्चों की मदद करने को तैयार रहती हैं, जो खुद दूसरों की मदद करते हैं।"

सुनहरी परी की बात सुनकर राजू फूला नहीं समाया, उसकी मुराद पूरी हो चुकी थी।

"धन्यवाद परी रानी, तुम कितनी अच्छी हो।" राजू ने मुसकराते हुए कहा,तो परी ने भी उसे शुक्रिया कहा।

"कौन परी, कैसी परी? अरे राजू यह तो मैं हूं रचना, तुम्हारे कक्षा में पढ़ने वाली एक लड़की।"

राजू की आंखें खुली तो देखा, वह पलंग पर सो रहा था और सामने खड़ी थी रचना, जो उसके लिए अधूरे नोट्स तैयार करके लाई थी ।

"तो क्या मैं सपना देख रहा था, परी कहां गई?" रचना को सामने खड़ा देखकर राजू सकपका गया।

सपना ही सही, पर इस सपने ने राजू को पूरी तरह बदलकर रख दिया था। अब वह हमेशा दूसरों की मदद करने वाला लड़का बन चुका था। ✪

हिमालय की गोद में

(सिक्किम यात्रा)

नवंबर 2014 में मैंने दिल्ली से और प्रशान्त और सुलक्षणा ने बंगलुरु से बागडोगरा तक हवाई यात्रा की थी। दिल्ली से बागडोगरा तक की हवाई यात्रा दो घंटे बीस मिनट की है। हवाई जहाज बादलों की जमीन पर सरकता हुआ बागडोगरा एअरपोर्ट पर उतरा । कुछ ही देर बाद बंगलुरु से प्रशान्त व सुलक्षणा आ गए।

बागडोगरा पश्चिम बंगाल का छोटा सा एयरपोर्ट है। इसके बाहर गाड़ी के साथ एक पहाड़ी युवक रवि हमारा इंतजार कर रहा था।

बागडोगरा से रांगपो तक पश्चिम बंगाल है। उसके बाद सिक्किम शुरु होता है। रास्ते में साथ-साथ चलती है, मनोरम तीस्ता नदी। पूरे रास्ते हम हरे-भरे पर्वत शिखरों के साथ तीस्ता के प्रवाह में खोए रहे।

जब हम गंगटोक पहुंचे, आसमान जैसे पहाड़ों पर उतर आया था। उसने बेशुमार सितारों से पहाड़ों को सजा दिया था। जिधर देखो, सिर्फ दीपमालिकाएं जगमगा रहीं थीं।

गंगटोक काफी साफ-सुथरा, सुंदर और हरा-भरा शहर है। ढलान पर बसा यह शहर बहुत दर्शनीय है।

यहां पैदल चलने वालों के लिए मजबूत रेलिंग वाला फुटपाथ है। बाजार में किसी भी तरह का वाहन ले जाना वर्जित है। शाम को यह देखकर अच्छा लगा कि लोग किसी मेले की तरह महात्मा गांधी रोड बाजार में टहल रहे थे। बच्चे सड़क पर दौड़ रहे थे।

गंगटोक की सुहानी सुबह

आंखें खुलते ही सामने दूर शिखरों पर चमकती हुई धूप ने मन में ढेर सारा उजाला भर दिया। पहाड़ पर गहरी हरियाली के बीच अटके किरणों के उजले लाल सुनहरे गुच्छे देख अनायास ही मन गा उठा, 'ये कौन चित्रकार है।'

सिक्किम शहर

धूप और धुंध का यह अद्भुत मेल मैंने पहली बार देखा, जो हिमालय में ही संभव है। बाहर हलकी सर्दी थी, पर सौ कदम चलने पर ही वह हांफ और हलकी ऊष्मा में बदल जाती थी।

सुदूर कंचनजंघा की दुग्ध-धवल चोटी ने मन को आश्चर्य और पुलक भर दिया है

सुबह आठ बजे हम नाथुला के लिए निकल पड़े। नाथुला चौकी 14200 फीट की ऊंचाई पर भारत-चीन सीमा पर बनी है। गंगटोक से नाथुला तक का लगभग पचपन किलोमीटर का रास्ता काफी संकरा और दुर्गम है। संकरे पथरीले कच्चे और धूल भरे रास्तों पर चलती गाड़ियां देख अचम्भा होता था।

नाथुला चौकी पर पहुंचना एक अद्भुत रोमांचक अनुभव था। जहां बेहद ठंडे मौसम में बर्फ की चट्टानों के बीच सांस लेना भी कठिन होता है, वहां जवान अपने देश की सुरक्षा के लिए अडिगता के साथ डटे रहते हैं। मेरा हदय गर्व, कृतज्ञता और श्रद्धा से भर गया और मुंह से निकल पड़ा

'जहां हवा भी जम जाती है
तुम भरते हुंकार ।
नज़र जमाए दुश्मन पर
हर आहट पर टंकार ।
पन्थ तुम्हारे पुष्प बना मन
करता अभिनन्दन ।
मातृभूमि के पहरेदारों
मेरा तुम्हें नमन ।'

कविता सुनकर जवानों की आंखों में जो भाव देखा, मुझे लगा कि मेरी कविता सार्थक हो गई है। सचमुच सारा देश सेना के जांबाजों का कर्जदार है। देश के लिए जीने मरने वाले लोग अपनी सुविधाएं नहीं देखते।

गंगटोक से लाचेन

नाथुला से लौटते हुए अंधेरा हो गया था और इतनी थकान भी हो गई थी कि बाजार जाकर कुछ शॉपिंग करने का विचार भी छोड़ना पड़ा। यहां जितनी जल्दी सुबह होती है, उससे कहीं ज्यादा जल्दी शाम हो जाती है। चार बजे ही सूरज पर्वत के पार जाने की तैयारी कर लेता है। तय हो गया कि साढ़े सात बजे तक हम लोग लाचेन के लिए निकल पड़ेंगे।

लाचेन गंगटोक से लगभग 130 कि.मी. दूर है। हमें याद नहीं कि कितने शिखर पार किए या कि दो चार शिखरों पर ही गाड़ी ऊपर नीचे घूमती रही। सभी शिखर एक जैसे। नीचे तीस्ता नदी की कल-कल बहती चंचल धारा हर मोड़ पर हमारे साथ थी।

रास्ते में कदम-कदम पर मां की गोद से मचलकर उतरते चंचल बालक जैसे इतने झरने मिलते हैं कि गिनती भूल जाती है। कहीं आंखें छोटी-छोटी चट्टानों पर उछल-कूद करती तीस्ता की धारा में खो जातीं हैं, कहीं घने जंगल के बीच पहाड़ की ममतामयी गोद में आराम से एक-दो घरों में ही पूरा गांव बसा लिया है।

यह सब देखते थकान का जरा अनुभव नहीं होता। लाचेन में कोई ईको-नेस्ट नामक होटल बुक था।

गहराती रात और सर्दी के चलते हम लोग जल्दी सो गए, क्योंकि हमें तीन-

अपने लेखक को जानिए

गिरिजा कुलश्रेष्ठ : व्याख्याता (हिन्दी), कविता, गीत, कहानियां, लघु-कथाएं, बाल-कहानियां, कविताएं, लघुनाटिकाएं विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। छोटी-बड़ी दस पुस्तकें प्रकाशित। दो बाल कहानियां चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट से पुरस्कृत

त्सोंगमो लेक

कंचनजंघा

रुमटेक मॉनेस्ट्री

नाथुला चौकी

नामची

चार बजे तक हर हाल में गुरुडोंगमार झील की ओर प्रस्थान जो करना था ।

सुबह चार बजे लाचेन से गुरुडोंगमार झील की ओर चल पड़े। 17500 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह झील हिमालय की अत्यन्त ऊंचाई पर स्थित झीलों में से एक है। बताया गया कि गुरुडोंगमार बौद्ध गुरु पद्मसंभव का ही एक नाम है।

सुबह चार बजे आसमान में तारे पूरी चमक के साथ जगमगा रहे थे । दूर दूर तक सिर्फ अंधेरा था। न कोई पहाड़ न कोई नदी। बस अंधेरा और अंधेरा। लगातार एक घंटे तक गाड़ी की हेडलाइट में सिर्फ रास्ता दिखाई देता रहा। उजाले होने तक हम ऐसी जगह पहुंच चुके थे जहां हरियाली के नाम पर एक झाड़ी भी नहीं थी। बस चट्टानों से फिसलती तीस्ता नदी थी, मटमैली पथरीली जमीन थी, ऊबड़-खाबड़ रास्ता था और सिर पर सफेद तौलिया सी बर्फ को लपेटे मटमैले धूसर पहाड़ थे। चोटियों पर जैसे किसी ने बड़ी बेतरतीबी से चूना बिखरा दिया था।

लाचेन से गुरुडोंगमार के लंबे बर्फीले और थकान भरे सफर में थांगू नामक छोटी सी जगह पड़ाव का कार्य करती है। यहां चाय, मैगी आदि के साथ बर्फ पर चलने के लिए जूते मिलते हैं। दुर्गम मार्ग में ऐसे पड़ाव अपने घर की अनुभूति देते हैं । बीच-बीच में सेना के जवानों का भी सहयोग कम नहीं होता।

झील के किनारे पहुंचकर हमारी आंखें झपकना ही भूल गईं। साफ नीले आकाश तले हिमाच्छादित शिखरों के बीच और नीली झील का सौंदर्य अनुपम था। आसमान जैसे हमारे अगल-बगल था। झील बहुत बड़ी नहीं है पर एक बहुत बड़ी नदी को आकार देती है। इसी से निकलती धारा आगे तीस्ता नदी का रूप ले लेती है। रवि ने बताया कि असल में तो तीस्ता का उद्गम एक और झील है 'शू लामो', जो यहां से चार पांच कि.मी. दूर है। वहां सेना की इजाजत के बिना नहीं जाया जा सकता।

प्रशान्त के साथ मैं भी नीचे झील तक पहुंच गई। लेकिन वापस चढ़कर आना बहुत भारी पड़ गया। हम साढ़े दस तक वहां से लौट पड़े।

"झील के लिए इतनी जल्दी जाने का और लौट पड़ने का कारण समझ नही आया रवि ?" मैंने पूछा।

रवि ने बताया कि ग्यारह बजे के बाद यहां हवाएं तेज हो जाती हैं। कंकड़-पत्थर तक उड़ने लगते हैं।

"तो सैनिक ?"

"उन्होंने तूफानों से दोस्ती करली है।" यह कहकर रवि हंस पड़ा । मैं एक बार फिर सेना के लिये नत-मस्तक होगई ।

लाचेन तक उतरते उतरते सूरज भी उतरने लौटने को तैयार था । हमने जल्दी-जल्दी खाना खाया क्योंकि अंधेरा होने से पहले हमें लाचुंग जो पहुंचना था ।

गुरुडोंगमार झील

चलो दौड़ लगाएं
चित्र और परिकल्पना : पंकज राय
ब्राउनी घोड़ा बड़ा बड़बोला और घमंडी था। एक दिन...
डब्बू, तुम मुझे सेल्यूट करो। मैं तुम से बड़ा और श्रेष्ठ हूं।
नहीं, मैं नहीं करूंगा
तुम इस जंगल में नए हो, इसलिए मुझे नहीं जानते। मैं तुम्हें आखिरी चेतावनी दे रहा हूं कि मुझे सेल्यूट करो।
यहां कोई भी छोटा-बड़ा या अच्छा-बुरा नहीं है, मेरे दोस्त। मुझे परेशान करने के बदले कहीं जाकर कोई अच्छा काम क्यों नहीं करते ?
डब्बू की बात सुनकर ब्राउनी को गुस्सा आ गया।
मैं इस जंगल का सबसे तेज दौड़ने वाला जानवर हूं। अगर मेरी इज्जत नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें इस जंगल से बाहर फेंक दूंगा। मुझे गुस्सा न दिलाओ। जैसा कह रहा हूं, चुपचाप कर लो।
डब्बू ने ब्राउनी को सबक सिखाने का निश्चय किया।
पता नहीं किसने तुम्हें यह कहकर मूर्ख बना दिया कि तुम इस इस जंगल के सबसे तेज दौड़ने वाले जानवर हो। तुमसे तेज तो मैं दौड़ लेता हूं। भरोसा न हो, तो कल नदी किनारे रेस लगा लो। तुम कोको बाज को रैफरी बनाकर ले आना।

अगले दिन सब नदी किनारे पहुंच गए।
जो भी नदी के पार बने टॉवर पर पहले पहुंचेगा, विजेता होगा।
मुझे मंजूर है। तुम्हें हराने को मैं बेकरार हूं।
कोको ने रेस शुरू करने का इशारा किया।
एक... दो... तीन... स्टार्ट
ब्राउनी तूफान की तरह दौड़ पड़ा। देखते-देखते उसमें और डब्बू में बहुत फासला हो गया। कोको उनपर नजर रख रही थी। डब्बू मजे में दौड़ रहा था।
हा...हा..., मुझे कोई नहीं हरा सकता।
ब्राउनी ने पहाड़ों और नदी को पार कर लिया। वह निश्चिंत था कि वही रेस जीतेगा।
थोड़ी देर में मैं टॉवर पर पहुंचकर डब्बू को इंतजार करूंगा।
ब्राउनी टॉवर के पास पहुंच गया।
मैं जीत गया। मैं डब्बू से श्रेष्ठ हूं। मुझे कोई नहीं हरा सकता।

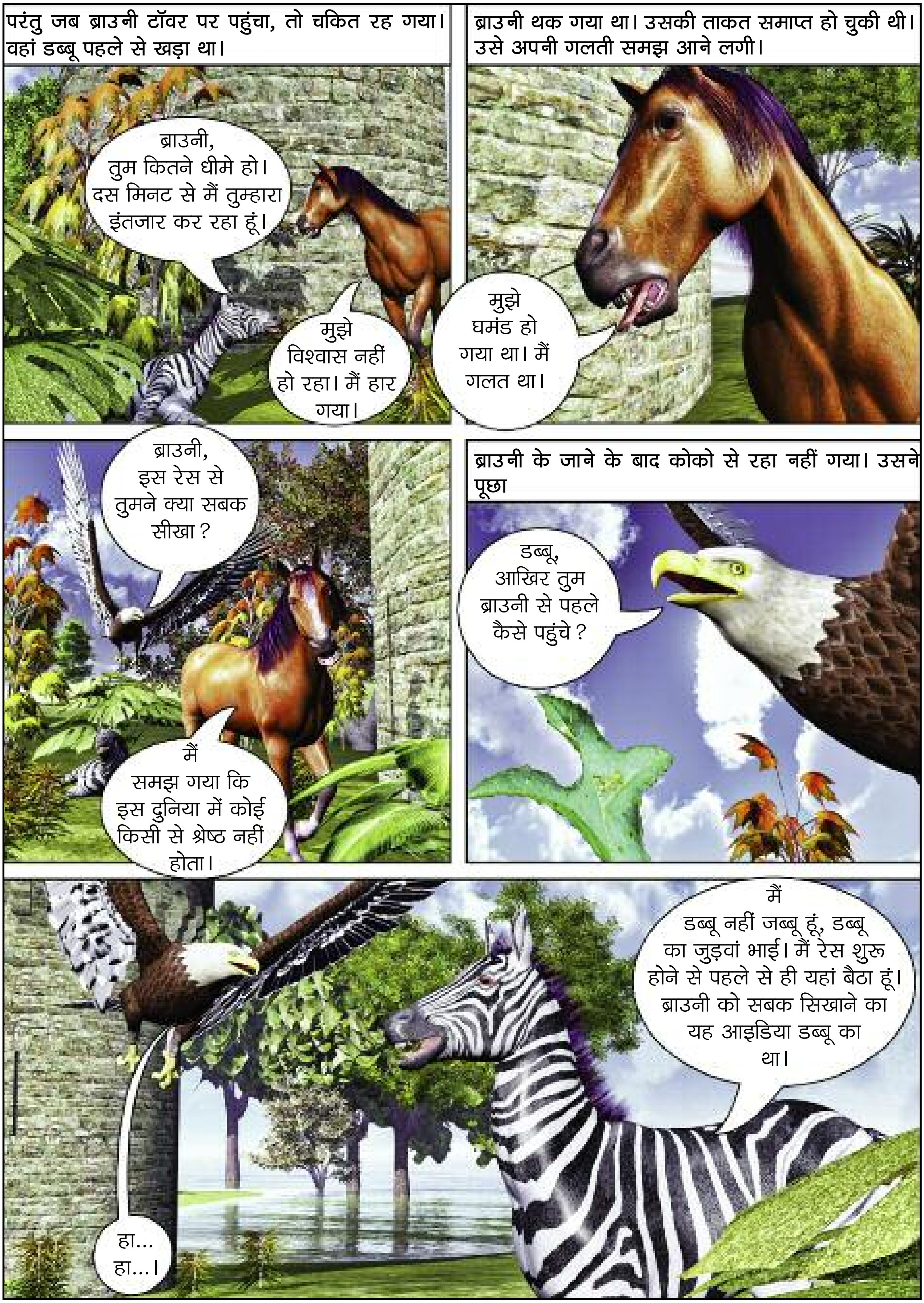
परंतु जब ब्राउनी टॉवर पर पहुंचा, तो चकित रह गया। वहां डब्बू पहले से खड़ा था।
ब्राउनी, तुम कितने धीमे हो। दस मिनट से मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।
मुझे विश्वास नहीं हो रहा। मैं हार गया।
ब्राउनी थक गया था। उसकी ताकत समाप्त हो चुकी थी। उसे अपनी गलती समझ आने लगी।
मुझे घमंड हो गया था। मैं गलत था।
ब्राउनी, इस रेस से तुमने क्या सबक सीखा?
मैं समझ गया कि इस दुनिया में कोई किसी से श्रेष्ठ नहीं होता।
ब्राउनी के जाने के बाद कोको से रहा नहीं गया। उसने पूछा
डब्बू, आखिर तुम ब्राउनी से पहले कैसे पहुंचे?
मैं डब्बू नहीं जब्बू हूं, डब्बू का जुड़वां भाई। मैं रेस शुरू होने से पहले से ही यहां बैठा हूं। ब्राउनी को सबक सिखाने का यह आइडिया डब्बू का था।
हा... हा...।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, दीप्ति मित्तल ने

रोहन श्रीवास्तव

नाम : रोहन श्रीवास्तव
उम्र : 9, कक्षा : 3,
स्कूल : एम जी एम हायर सेकंडरी स्कूल, गायत्री नगर रायपुर, छत्तीसगढ़

आरना गौरव

नाम : आरना गौरव
उम्र : 9
कक्षा : 5, सेंट जेवियर्स सीनियर सेकंडरी स्कूल, बलरामपुर (उ.प्र.)

गरिमा सिंह

आदित्य पाण्डेय

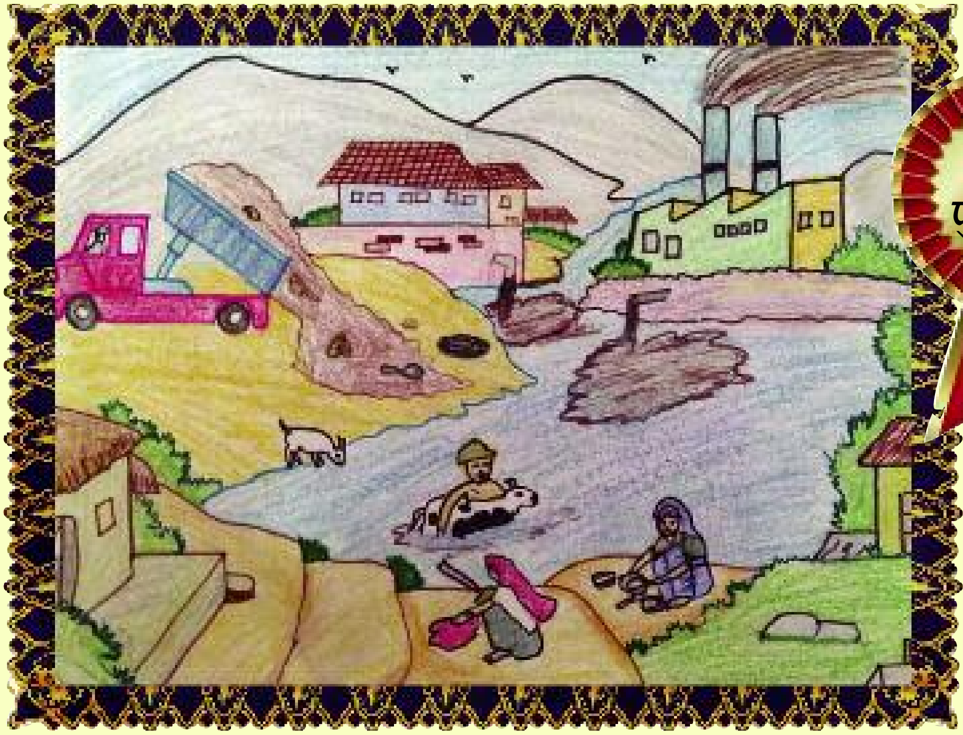

द्वितीय पुरस्कार

शिवांक गुप्ता

नाम : गरिमा सिंह
उम्र : 12, कक्षा : 8
स्कूल : आक्सफोर्ड माडल स्कूल, वलड वर्ल्ड बैंक, बर्रा, कानपुर नगर, उ.प्र.

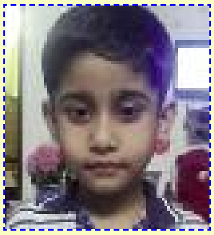

नाम : आदित्य पाण्डेय
उम्र : 7
कक्षा : 1
न्यू लुक कान्वेंट स्कूल नागपुर, महाराष्ट्र

शिवांक गुप्ता
उम्र : 8
कक्षा : 3, स्कूल : उर्मी स्कूल एंड होस्टल्स, वडोडरा, गुजरात

अर्शदीप ऐरी

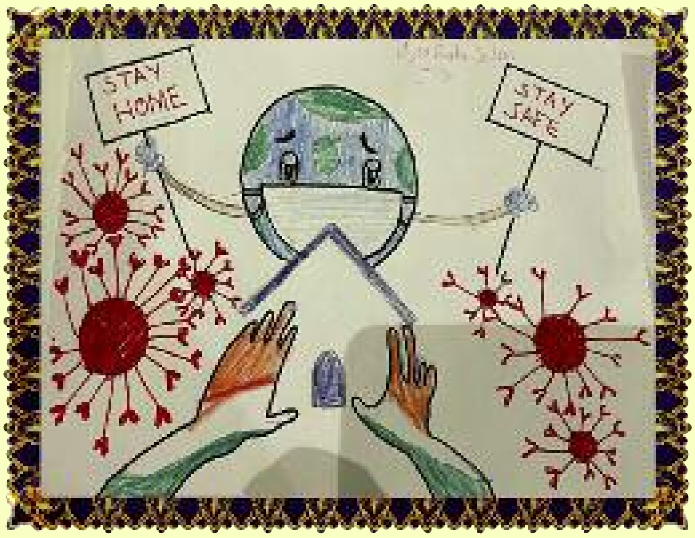

सय्यद क़ुबा सलीस

कुनिका कौशिक

अर्श दीप ऐरी
कक्षा : आठ
उम्र : 12 , टाइम्स पब्लिक स्कूल, हनुमान गढ़ टाउन, राजस्थान

नाम : सय्यद क़ुबा सलीस
आयु : 6 वर्ष
कक्षा : 1
स्कूल : ओ. एल. एफ़. स्कूल, अलीगढ़, उ.प्र.

कुनिका कौशिक,
उम्र : 6 वर्ष,
कक्षा : एक,
केन्द्रीय विद्यालय,
बीकानेर

तृतीय पुरस्कार

शांभवी गुप्ता

आन्या

अंशुमन रॉय

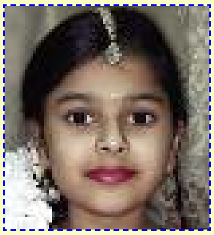

शांभवी गुप्ता,
उम्र : दस वर्ष
कक्षा : पांच
विद्या भवन पब्लिक स्कूल, इंदौर, म.प्र.

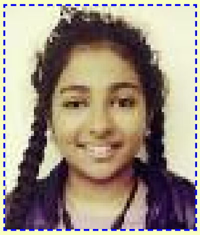

नाम : आन्या
उम्र : 11 साल
कक्षा : 6
स्कूल : क्वींस वैली स्कूल, नई दिल्ली

नाम : अंशुमान रॉय
उम्र : 5 वर्ष
कक्षा : यू.के.जी.
स्कूल : सेंट जोसेफ, खोराबार, गोरखपुर, उ.प्र.

प्यारी बहना

चंदा मामा से भी प्यारी
मुझ को तो वह लगती है
मेरी प्यारी बहना मुझको
परियों जैसी दिखती है

जादू की पुड़िया है शायद
पल भर में जादू करती है
जैसी भी हो मुश्किल मेरी
दूर उसी क्षण करती है

मैं हूँ उसका राजा भैया
बहना का ये कहना है
पल दुःख के हों या सुख के हों
हमें साथ सदा ही रहना है

चाहे डगर कठिन कितनी भी हो
वह कभी नहीं घबराती है
मेरी प्यारी बहना मुझको
परियों जैसी लगती है

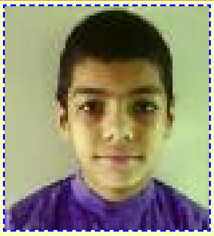

हार्दिक ऐरी
उम्र : 11 साल
कक्षा : 6, स्कूल : ब्राइट
लैंड कॉन्वेंट स्कूल, श्री
गंगा नगर, राजस्थान

रंगीन दुनिया

आओ बच्चों तुम्हें दिखाऊँ
एक रंगीन दुनिया ऐसी भी
जहाँ भाँति-भाँति के प्राणी पंछी
प्यारी न्यारी गुडियां भी

खाने को लड्डू और पेड़े
चॉकलेट पेस्ट्री गुझिया भी
पर्वत आइस क्रीम जेली के
दूध दही की नदियाँ भी

अजब ग़ज़ब से खेल खिलौने
हाथी, घोड़े, बंदरिया भी
तितली जैसे पंखों वाली
छैल छबीली परियां भी

मोबाइल इंटर नेट की दुनिया से
तुम बाहर तो आ कर देखो
जीवन का ये मधुर तराना
मेरे संग गाकर देखो

निहारिका शर्मा
उम्र : 13 साल
कक्षा : 9, स्कूल : ब्राइट
लैंड कॉन्वेंट स्कूल, श्री
गंगा नगर, राजस्थान

जादुई लेखनी

"मां, मुझे आसमां की सैर करनी है, मुझे परियों से मिलना है।" बोलकर नव्या जोर जोर से रोने लगी। मां के लाख समझाने के बावजूद भी उसपर कोई असर नहीं हुआ। आखिरकार नव्या रोते-रोते सो गई।

नव्या पांच साल की एक नासमझ छोटी बच्ची थी। उसने अपनी दादी मां से परियों की अनेकों कहानियां सुनी थीं। जिसमें परियां बच्चों को आसमान की सैर कराती थीं। अब क्या था, उसने आसमान की सैर करने की जिद पकड़ ली।

सपने में नव्या ने देखा कि एक परी आई और उसको एक लेखनी दी। मोर के पंखों से बनी वो लेखनी देखने में बहुत ही सुंदर थी। लेखनी देने के बाद परी ने नव्या से कहा, "नव्या, इस लेखनी से तुम जो भी बनाओगी, वो सच हो जाएगा"।

नव्या लेखनी पाकर बहुत खुश हुई। उसने अपनी लेखनी से सबसे पहले एक पंख बनाया, फिर उस पंख पर एक परी के साथ खुद को बैठाया। देखते ही देखते वह पंख उन दोनों को साथ लेकर उड़ने लगा और नव्या आसमान की सैर करने लगी। नव्या जब सुबह जागी, तो खुशी से उछल पड़ी। मां उसकी खुशी का राज जानकर एकमुस्कान लिए नव्या को प्यार करने लगी।

अर्श राज
कक्षा :2
उम्र : उपलब्ध नहीं
स्कूल : उपलब्ध नहीं

चंदा मामा

टुकुर- टुकुर देखते हैं चंदा मामा
तारों संग घूमते हैं चंदा मामा।।

लगता है माँ ने कभी पीटा नहीं
आवारा से घूमते हैं चंदा मामा।।

गायब हो जाते, फिर दिखते नहीं
बढ़ते हैं कभी घटते हैं चंदा मामा।।

रातों को जागकर देते हैं पहरा
चौकीदारी करते हैं चंदा मामा।

अपनी धरती माँ के लाडले भैया हैं
रिश्ते को निभाते हैं चंदा मामा।।

क्रोध में आये तो सागर को हिला दें
वैसे तो शांत रहते हैं चंदा मामा।।

मानसी कदम
उम्र : 13 साल
कक्षा : 8,
केन्द्रीय विद्यालय, गोल मार्किट, नयी दिल्ली

पुस्तक परिचय

पुस्तक : विज्ञान की दुनिया
लेखक : देवेंद्र मेवाड़ी
प्रकाशक : नवारुण प्रकाशन,गाज़ियाबाद
मोबाइल : 9811577426
ईमेल : navarun.publication@gmail.com
मूल्य : पेपरबैक रु.150, हार्डबाउंड रु.300

प्रिय नेहल

उम्मीद है, तुमने पुस्तक मेले से खरीदी किताब 'मेरी यादों का पहाड़' पढ़ ली होगी। यहां मैंने 'विज्ञान की दुनिया' शुरू से आखिरी तक पढ़ डाली है। सच नेहल... 'विज्ञान की दुनिया' कमाल की किताब है!

मुझे अंतरिक्ष की बातें जल्दी समझ में नहीं आतीं। पर देवी दा ने उन्हें इतनी आसानी से समझाया है कि चीजें खुद-ब-खुद दिमाग में उतरती चली जाती हैं। वे अपनी जादुई कलम से हमारे पड़दादों यानी आदिमानव की दुनिया की सैर पर भी ले गए। इस किताब में उन्होंने अंतरिक्ष के साथ ही रोबोट, डायनासोर, पक्षियों, फूलों, त्योहारों, परियों सब की ही बातें की हैं।

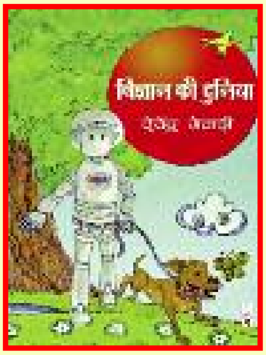

यह छोटी सी किताब तो मैंने दो दिन में ही पढ़ डाली। पर तुम यह मत समझना कि इसमें सिर्फ कहानियां हैं! देवी दा इसमें ऐसी-ऐसी चीजों और जगहों का नाम लेते हैं कि तुम्हें गूगल ही करना पड़ जाए! जैसे मुक्तेश्वर की चौली-जाली, डोडो, जबलपुर के डायनासोर, अकबर के चीते, चितकबरी कोयल, दीमक की गाय बीटल, देवताओं के पवित्र वन, नीली पहाड़ियां और न जाने क्या-क्या! जिनसे हमें डर लगता है वे भूत, जिन्हें हम जानना चाहते हैं वे एलियन, जिन्हें हम देखना चाहते हैं वे अप्सराएं, सभी इस किताब में हैं।

'विज्ञान की दुनिया' पढ़कर मैंने जाना कि किसी चीज को उसकी हिस्ट्री जानकर हम आसानी से समझ सकते हैं।

अंत में एक बात और.. अब की जब भी तुम मम्मी-पापा के साथ मेरे घर आओगी, हम 'एनकाउंटर्स ऑफ़ द थर्ड काइंड' और ई .टी. जैसी मूवीज भी देखेंगे, जिनकी चर्चा देवी दा ने 'विज्ञान की दुनिया' में की है।

तुम्हारी दोस्त, अपराजिता

समीक्षक : डॉ. अनुपमा गुप्ता

पुस्तक : सुहानी कविताएं
लेखिका : सुहानी यादव
प्रकाशक : शुभांजलि प्रकाशन, कानपुर
मोबाइल : 8707872316
मूल्य : 395 रुपए

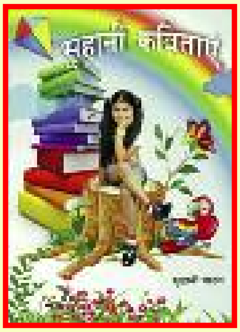

13 साल की सुहानी यादव में बाल साहित्य लेखन की जो अभिरुचि है, उससे बड़े-बड़े साहित्यकार प्रभावित हैं। सुहानी की पुस्तक के लिए प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल का शुभकामना संदेश प्राप्त हुआ है। वहीं बाल साहित्यकार दिविक रमेश, शायर मुनव्वर राणा, चर्चित गीतकार कुंवर बेचैन, अरुणेंद्र सोनी, सुरेंद्र चतुर्वेदी, सतीश अवस्थी, भगवंत अनमोल और मृदुल कपिल के बधाई संदेश समेत उनका आशीर्वाद भी मिला है।

सुहानी ने पहली कविता 'मेरे कान्हा' में श्री कृष्ण के मनोहारी स्वरूप का वर्णन किया है। 'नदियां' कविता के माध्यम से आगे बढ़ते रहने का संदेश दिया है। 'बसंत' कविता में प्रकृति का सुंदर चित्रण किया गया है। 'मेरी टीचर' कविता में सुहानी का शिक्षक प्रेम साफ झलक रहा है। अगली कविता गुड और बैड टच की जानकारी दे रही है। 'मेरा देश' कविता में सुहानी देशप्रेम की अलख जगा रही हैं। कविता 'सैनिक भाई' सैनिकों के प्रति सम्मान जगा रही है। पौधे रोपने को लेकर 'प्यारे पौधे' कविता महत्वपूर्ण है। बारिश, पतंग, छुट्टी और जैक एंड जिल कविताएं मनोरंजन की बानगी हैं। 'बेटी' और 'सुहानी बेटी' जैसी कविताएं बालिकाओं के उत्थान को समर्पित हैं। होली, दिवाली, दशहरा, चंदामामा, जल, गंगा मैया, बंदर आदि कविताएं भी संग्रह की शोभा बढ़ा रही हैं।

ये कविताएं सुहानी के हुनर का प्रमाण हैं। न केवल मनोरंजन बल्कि गूढ़ अर्थ वाली कविताएं भी बच्ची ने आसानी से रची हैं। सरल शब्दों का उपयोग किया गया है। उम्दा भाव हैं, लेकिन नन्ही कवयित्री के लेखन में सुधार की गुंजाइश है। विश्वास है कि समय के साथ वह उसे भी दुरस्त कर लेंगी।

पुस्तक का मूल्य 395 होने की वजह से यह बच्चों की पहुंच से कुछ दूर प्रतीत हो रही है। हालांकि इन कविताओं को पढ़कर पाठक प्रसन्नता महसूस करेंगे।

समीक्षक : शिव मोहन यादव

1. नदियों के नाम खोजें

आपको इस कहानी में कम से कम 20 नदियों के नाम खोजने हैं।

आज चंबल स्टेडियम में 'ब्रह्मनाद' कार्यक्रम का आयोजन है। कृष्णा अपने पुत्र बाणभट्ट के साथ देखने गई। वहां उसे गंगा और कावेरी नाम की सहेलियां मिली। सबने बचपन की खूब बातें की। तभी गोमती ने आकर बताया कि कार्यक्रम शुरू हो गया है।

मुख्य अतिथि डॉ नर्मदा शंकर व्यास ने महान नेता की तस्वीर के आगे दीप जलाया। शिव पार्वती और अमरनाथ की झांकी के सामने सोनम ने नृत्य किया जो शुरू में धीमा ही रहा। नाटिका 'हमारा वीर' में सतपाल जस्सू राजा साब बना, सरिता व रमती को दासी का रोल मिला। कार्यक्रम बहुत मजेदार रहा। सब सहेलियां खुशी-खुशी घर लौटी। बीच में कृष्णा ने सुबाहु गली से आलू नीबू और प्याज खरीदे।

प्रकाश तातेड़, उदयपुर

2. क्या अलग है

इन चार में से क्या अलग है। पता कीजिए

1. क. स्कूल, ख. शिक्षक, ग. किताब, घ. पत्रिका
2. क. विकेट, ख. गोल, ग. बैट, घ. बॉल
3. क. सचिन तेंदुलकर, ख. अभिनव बिंद्रा, ग. राहुल द्रविड़, घ. विराट कोहली
4. कंप्यूटर, ख. चार्जर ग. माउस, घ. टाइप सी केबल
5. क. गौरैया, ख. मैना ग. कबूतर, घ. बाज
6. क. राम, ख. गोपाल, ग. श्याम, घ. वंशीधर
7. क. नीर, ख. जल, ग. धारा, घ. पानी
8. क. अमिताभ, ख. जया, ग. श्वेता, घ. अभिषेक
9. क. चंपक, ख. नंदन, ग. चकमक, घ. सरिता
10. क. गंगा, ख. गोमती, ग. क्षिप्रा, घ. यमुना नदी

3. शब्द बनाओ

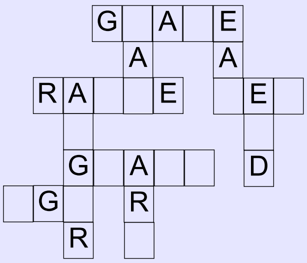

R N G D E A

4. क्या आएगा

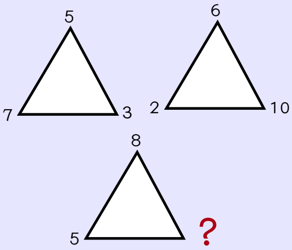

क. 12, ख, 14, ग. 16, घ. 11

5. जरा बताओ

मधुबनी पेंटिंग का भारत के किस राज्य से संबंध है ?

क. राजस्थान , ख. मध्य प्रदेश

ग. बिहार, घ. छत्तीसगढ़

6. नाता जोड़ो

मैदान में खेलती हुई लड़की की तरफ इशारा करते हुए सुशील ने कहा, "वह लड़की मेरे पिता की इकलौती संतान की लड़की है।"

बताओ वह लड़की सुशील की पत्नी की क्या लगेगी ?

क. पत्नी, ख. मां, ग. बेटी, घ. आंटी

पहेलियों के उत्तर

1. नदियों के नाम खोजें

1.चंबल, 2. ब्रह्मपुत्र, 3. कृष्णा, 4. बाणगंगा, 5. गंगा, 6. कावेरी, 7. गोमती, 8. नर्मदा, 9. व्यास, 10. महानदी, 11. शिवनाथ, 12. पार्वती, 13. सोन, 14. माही, 15. रावी, 16. सतलज, 17. साबरमती, 18. बनास, 19. हुगली, 20. लूनी

2. क्या अलग है

1.पत्रिका क्योंकि बाकी का सीधा संबंध स्कूल से है।
2. गोल, क्योंकि बाकी का सीधा संबंध क्रिकेट से है।
3. अभिनव बिंद्रा, क्योंकि बाकी नाम क्रिकेटर के हैं।
4. टाइप सी केबल, क्योंकि बाकी का सीधा संबंध कंप्यूटर से है।
5. बाज, क्योंकि बाकी घरेलू और शाकाहारी पक्षी हैं।
6. राम, क्योंकि बाकी श्रीकृष्ण के अन्य नाम हैं।
7. धारा, क्योंकि बाकी पानी के पर्यायवाची हैं।
8. श्वेता, क्योंकि बाकी सब एक्टिंग करियर वाले हैं।
9. सरिता, क्योंकि बाकी नाम बाल पत्रिकाओं के हैं।
10. क्षिप्रा, क्योंकि बाकी नदियों का संबंध उत्तर प्रदेश है।

3. शब्द बनाओ

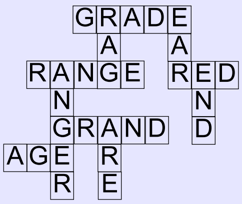

4. क्या आएगा

11. क्योंकि जो भी ऊपर लिखा अंक है, उसका दोगुणा अंक नीचे के दोंने अंक मिलाकर बनता है।

5. जरा बताओ

बिहार

5. नाता जोड़ो

ग. बेटी

फुटबॉल का सफर

अनिल जायसवाल

गोल...गोल..., बोले तो फुटबॉल। एक ऐसा खेल, जो पूरी दुनिया में खेला और देखा जाता है। दुनिया भर में सबसे ज्यादा खिलाड़ी इसी खेल के हैं। सबसे ज्यादा क्लब इसी खेल से संबंधित हैं। खेलने के लिए भी केवल एक बॉल चाहिए। फिर जहां चाहे, शुरू हो जाओ, चाहे जूते हों या न हो। शायद सबसे सस्ता खेल है यह और इसीलिए यह हर किसी का हो पाया।

पर इस खेल की शुरुआत कैसे हुई? कौन था जिसने इसकी शुरुआत की? कैसे यह पूरी दुनिया में फैला? कहना कठिन है। बहुत पहले प्राचीन ग्रीक और रोमन लोग बॉल से खेले जाने वाले खेल खेलते थे। इनमें से कुछ खेलों में पैरों से बॉल को ठोकर मारने का वर्णन मिलता है। माना जाता है कि हारपेस्टम नामक रोमन खेल एपिस्किरोस या फैनिंडा नामक एक टीम गेम से प्रेरित है। इसका प्रमाण एक ग्रीक नाटक एटिफेनस में मिलता है। इसे 388 वर्ष ईसा पूर्व लिखा गया था। गेंद में हवा भी भरी जाती थी, ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

पर सुबूत की बात करें, तो तीसरी सदी में एक चाइनीज सैन्य पुस्तक में एक ऐसे खेल का वर्णन मिलता है, जिसे सुजू कहते थे। इसका अर्थ है किक बॉल। इसमें एक चमड़े की गेंद को किक मारी जाती थी। यह गेंद जमीन से ऊपर एक बांस पर टंगी होती थी। हान साम्राज्य के दौरान इस खेल के नियम लिखे गए। यह खेल चीन की सरहद से बाहर निकलकर जापान में केमारी और कोरिया में चुक-गुक नाम से लोकप्रिय हुआ। टैंग साम्राज्य के दौरान चीन में पंख से भरे हलकी गेंद की जगह हवा से भरी गेंद ने ले ली। खेल के लिए दो गोल पोस्ट बनाने की शुरुआत इसी दौर में हुई।

जापान में यह खेल एक सर्कल में खेला जाता था। इसमें भी खिलाड़ी गेंद पर किक मारते थे और उनकी

कोशिश होती थी कि गेंद जमीन को न छू पाए।

यूरोप में इस खेल के खेले जाने का पहला प्रमाण 1586 मिलता है। एक अंग्रेज खोजकर्ता जान डेविस ने अपनी टीम के साथ ग्रीनलैंड में एस्कीमोज के साथ फुटबॉल खेला था। 1610 में ऑस्ट्रेलिया में मार्न ग्रूक नामक एक खेल का उल्लेख मिलता है। वहां पैर से ठोकर मारकर इस खेल को खेला जाता था। इसी दौरान यह खेल यूरोप में खूब लोकप्रिय हुआ और वहां भीड़ की भीड़ एक साथ इस खेल को खेलती थी। इसलिए उस समय इस खेल को वहां मॉब फुटबॉल कहा जाता था। इसी कारण कई बार इस खेल पर प्रतिबंध भी लगा। एक बार लंदन के मेयर निकोलस डी फर्नदोने ने फुटबाल के खेल पर प्रतिबंध लगा दिया था। उनकी आज्ञा कुछ इस तरह से थी, "फुटबॉल खेलने से खूब शोर उत्पन्न होता है। इससे जनता में शैतानी ताकतें घर कर जाएंगी, जो ईश्वर को अच्छा नहीं लगेगा। अतः मैं राजा की तरफ से इसे प्रतिबंधित करता हूं। आज्ञा न मानने वाले को सजा मिलेगी।"

पर समय के साथ इस खेल की लोकप्रियता बढ़ती गई और प्रतिबंध भी धीरे-धीरे हटा लिए गए। तब यह महसूस किया गया कि इस खेल को नियम के साथ खेलने की जरूरत है। इसके लिए इंग्लैंड के पब्लिक स्कूल सामने आए, जहां यह खेल खूब खेला जाता था। उन्होंने पहली बार इस खेल में सीमित संख्या में खिलाड़ियों को उतारने का बात की। फिर खेल के लिए उन्होंने कुछ नियम भी तय किए। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में पहली बार ऑफ साइड का नियम भी उन्होंने ही बनाया। उन्होंने इस खेल को स्कूलों में खेलना अनिवार्य कर दिया।

इंग्लैंड से यह खेल पूरे विश्व में फैला। खासकर दक्षिण अमेरिका में इस खेल ने जड़े जमाईं। करीब 1870 में जॉन मिलर नामक एक व्यक्ति ब्राजील के साओ पावलो के रेल कारखाने में काम करता था। उसने अपने बेटे चार्ल्स विलियम मिलर को पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा। वहां उसने फुटबॉल में महारत हासिल कर ली। जब वह ब्राजील लौटा, तो अपने साथ यह खेल ले आया। वहां के साओ पावलो स्पोर्ट्स क्लब से जुड़कर उसने इस खेल को ब्राजील में लोकप्रिय किया।

इन्हीं दिनों ब्रिटिश लोग जो अर्जेंटीना में काम करते थे, उन्होंने फुटबाल के खेल को वहां शुरू किया। इस तरह 1850 से 1900 तक पूरे अमेरिकी महाद्वीप में इस खेल ने अपनी जड़ें जमाईं।

19वीं शताब्दी में फुटबॉल का खेल पूरे यूरोप में बड़ी तेजी से फैला। इस सदी के मध्य से अंत तक यह खेल डेनमार्क, इटली और स्विट्जरलैंड में पूरे शबाब पर था। सन 1900 तक जर्मनी में फुटबॉल एसोसिएशन का गठन हो चुका था। अब यह माना जा सकता था कि फुटबॉल का खेल सचमुच ग्लोबल हो गया है।

पर पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधकर इस खेल के सहारे निकट लाने का काम किया फुटबॉल के विश्व कप ने। 21 मई 1904 को पेरिस में फुटबॉल की संचालक संस्था फीफा का गठन किया किया गया। उसी के प्रयासों से 1930 में उरुग्वे में पहला विश्व कप फुटबॉल का आयोजन हुआ, जिसे उरुग्वे ने ही जीता। इस विश्वकप में केवल 13 टीमों ने भाग लिया। पर आज हालत यह है कि फीफा के सदस्य देशों की संख्या 211 है जो संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों से 18 ज्यादा हैं।

प्रथम विश्व कप विजेता उरुग्वे की फुटबॉल टीम

महानतम फुटबॉलर माने जाने वाले ब्राजील के पेले

फुटबॉल के जादूगर अर्जेंटीना के माराडोना

2018 विश्वकप फुटबॉल विजेता फ्रांस की टीम

हंसना जरूरी है

रोहित, "बता सोनू, चोरी करते समय चोर अपने चेहरे पर नकाब क्यों पहन लेता है?"

सोनू, "ताकि पकड़े जाने पर सब उसे डॉक्टर समझकर छोड़ दे।"

पापा, "बेटे, जरा आज का अखबार तो लेकर आओ।"

बेटा, "पापा, मैं तो उसे कल से ढूंढ़ रहा हूं, मिल ही नहीं रहा है!"

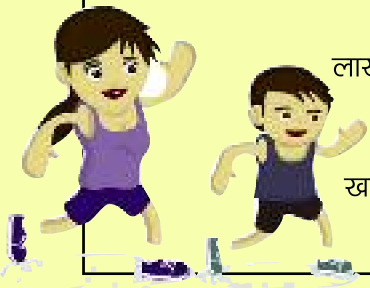

राजू, "मम्मी, तुम्हारे लिए मेरी क्या कीमत है?"

मां, "बेटा, तू तो मेरे लिए लाखों का है।"

राजू, "तो लाखों में से बीस रुपए दे दो, चॉकलेट खानी है।"

पिता , "तुम फिर झूठ बोल रहे हो! तुम्हें बताया था कि झूठ बोलना अच्छी बात नहीं है। झूठ मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है।"

बेटा, "लेकिन पापा, कल तो आपने कहा था कि हमें दुश्मनों से भी प्यार करना चाहिए!"

अध्यापक, "बताओ, 'रैट' का मतलब क्या होता है?"

छात्र, "सर, चूहा।"

अध्यापक, "चूहे की स्पेलिंग बताओ?"

छात्र (हिचकिचाते हुए), "आर...ए...."

तभी अध्यापक ने छात्र को धमकाकर कहा– "बताओ, आखिर में क्या बचा?"

छात्र (हड़बड़ाकर), "सर, आखिर में चूहे की पूंछ!"

कवि (डाक्टर से), "डाक्टर साहब, मेरे दांतों में बड़ा दर्द हो रहा है।"

डाक्टर, "यह कब से है?"

कवि, "जब से मैंने लोहे के चने चबाने पर कविता लिखी और मंच पर उसकी गान किया है।"

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। एक अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, पर सबके सहयोग से अपनी बात लोगों तक मजबूती से जरूर रख सकता है। अब पायस का पांचवा अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। चाहे वरिष्ठ हों अथवा युवा साथी, सभी ने यथासंभव सहयोग दिया। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. अंजीव अंजुम
2. मोनिका अग्रवाल
3. दीप्ति मित्तल
4. सुधा भार्गव

भुगतान करना चाहें तो

1 प्रति : 20 रुपए

एक वर्ष :240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर ✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**